ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

भादों-आश्विन संवत् नानकशाही ५५४ सितंबर 2022 वर्ष १६ अंक १

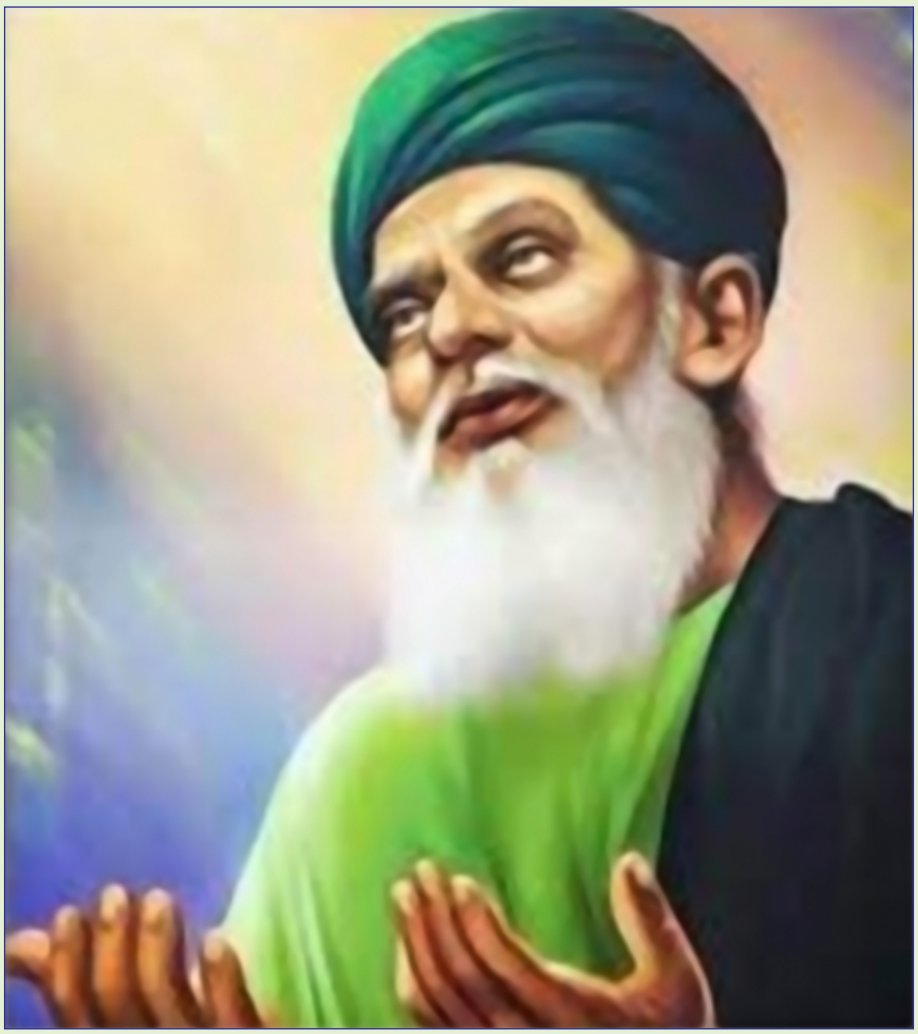

भक्त शेख फरीद जी

घरि घरि बाबा गावीऐ वजनि ताल म्रिदंगु रबाबा।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

भादों-आश्विन, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 16 अंक 1 सितंबर 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार	4
संपादकीय	5
.... भक्त शेख फरीद जी -डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ	7
भक्त शेख फरीद जी की बाणी ... -डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'	14
माता सुलक्खणी जी -डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल	17
ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी -डॉ. मनजीत कौर	19
.... शहीद स. भगत सिंघ -सिमरजीत सिंघ	22
ख़ालसे के बोलबाले का दौर -स. किरपाल सिंघ	35
सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ -डॉ. परमजीत कौर	39
गुरबाणी संगीत और वार-गायन -डॉ. जतिंदर कौर	42
खबरनामा	48

गुरबाणी विचार

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥
जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में आश्विन मास की ऋतु और इसके प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के प्रसंग में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम के साथ जुड़कर मानव जीवन का अमूल्य अवसर सफल करने का गुरमति मार्ग प्रदान कर रहे हैं।

गुरु जी जीव-स्त्री रूपी युवती को आध्यात्मिक दिशा देने हेतु उसका प्रतिनिधित्व करते हुए कथन करते हैं कि भादों माह की हुंमस के बाद आश्विन मास में आई सुहावनी मीठी ऋतु में मेरे अंदर पति-परमात्मा के लिए प्रेम का उछाल आ रहा है। मेरे मन में यह ख्याल आता है कि जैसे भी हो किसी न किसी तरह ऐसे सुहावने मौसम में मैं प्रभु-पति से जाकर मिलूं। हे मेरी मां! मेरे मन एवं शरीर में अर्थात् मेरे समस्त अस्तित्व में पति-परमात्मा के दीदार की प्यास प्रबल हो गई है। संत-जन, जो प्रभु-प्रेम बढ़ाने में मददगार होते हैं, मैं उनके चरणों के साथ जुड़ी हूं, इसलिए मुझे अनुभव हो गया है कि प्रभु-पति के बगैर जीव-स्त्री सच्चा सुख अथवा आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं कर सकती।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिन जीवों ने प्रभु-प्रेम का रस चख लिया है वे सदैव संतुष्ट-भाव में रहते हैं अर्थात् उनको सांसारिक इच्छाएं दुखित नहीं करती। वे 'स्व' का परित्याग कर देते हैं और सदैव यही विनती करते रहते हैं कि हे प्रभु! हमको अपने साथ जोड़े रखना अर्थात् अपने नाम-सिमरन के साथ जोड़े रखना। जिस जीव-स्त्री को पति-परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त हो गया है वह उससे बिछड़ कर अन्य कहीं नहीं जाती, क्योंकि उसको भली-भांति अनुभव हो जाता है कि परमात्मा के बगैर कोई अन्य ठिकाना नहीं है। आश्विन मास की मीठी-मीठी ऋतु में वही जीव-स्त्रियां आत्मिक सुख में बसती हैं जिन पर परमात्मा रूपी राजा-पति की कृपा होती है।

संपादकीय

सर्वसांझीवालता

मानव-जन्म बहुमूल्य, दुर्लभ एवं अकाल पुरख से मिलाप का सुनहरी अवसर है। जीवन को सफल बनाने व प्रभु को पाने का मार्ग प्यार, सद्भावना एवं सर्वसांझीवालता की भावना में विचरण करना है।

मनुष्य पूर्व काल से ही छोटे-बड़े, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब की भावना एवं ईर्ष्या में बहुत बुरी तरह से जकड़ा हुआ है। सिक्ख गुरु साहिबान और भक्त साहिबान ने इस असहनीय हालत को प्रभु-भक्ति के रंग में ढालने के बहुत प्रयत्न किए। इस कार्य के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने सुखमयी सरकारी नौकरी तथा घर-गृहस्थी के सम्पूर्ण सुख-आराम त्याग कर अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया। श्री गुरु नानक देव जी का मुख्य उद्देश्य सर्वसांझीवालता था। यही उद्देश्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक निरंतर विकास करता गया।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने सर्वसांझीवालता के उद्देश्य को दृढ़ करने के लिए बहुत प्रयत्न किए। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी के पद-चिन्हों पर चलते हुए श्री गुरु रामदास जी द्वारा बसाई गई सर्वसांझीवालता की प्रतीक नगरी श्री अमृतसर में सर्वसाझे स्थान सचखंड श्री हरिमंदर साहिब का शिलान्यास अज़मत वाले मुसलमान फ़कीर साँई मियां मीर जी से करवाया। यह प्रथम धर्म-स्थान था, जिसके प्रवेश द्वार चारों दिशाओं की तरफ रखवाकर यह एलान किया गया था कि यह धर्म-स्थान सबका साझा है। यहां पर आने की किसी को मनाही नहीं है। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री अमृतसर की पावन धरती पर श्री रामसर साहिब सरोवर के किनारे विराजमान होकर गुरु-घर के अनन्य सेवक एवं विद्वान भाई गुरदास जी की सेवाएं लेते हुए १६०४ ई. में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना की। यह सर्वसांझीवालता को दृढ़ करने के लिए अहम कदम था। दशम पातशाह साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १७०६ ई. में दमदमा साहिब, तलवंडी साबो की पावन धरती पर विराजमान होकर भाई मनी सिंघ जी और बाबा दीप सिंघ जी की सेवाएं लेते हुए नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल की। सन् १७०८ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई प्रदान की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी सर्वसांझीवालता का भंडार है। इसमें ३६ बाणीकारों ने समय, स्थान, धार्मिक मत, कर्म, किरत, जात-पाँत, रंग-नस्ल के भेदभाव को ध्वस्त करने हेतु आदर्श भूमिका

निभाई है। इसमें दुनिया भर के मनुष्यों को परम पिता परमात्मा की सच्ची भक्ति, नाम-सिमरन और शुभ कर्म करने का संदेश देते हुए सर्वकल्याणकारी सरबत्त के भले का उपदेश दिया गया है।

आज भी सम्पूर्ण विश्व धर्म, देश और भाषा के नाम पर बुरी तरह से विभक्त हुआ पड़ा है। अलग-अलग धार्मिक फिरकों के बीच खींचतान व ईर्ष्या-द्वेष की जंग छिड़ी हुई है। कत्लेआम का दौर चल रहा है। ऐसे दुखदायी घटनाक्रम को रोकने हेतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब से सही एवं सार्थक दिशा प्राप्त की जा सकती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब वो सर्वोत्तम ग्रंथ है, जिसकी रोशनी में आदर्श जीवन-युक्ति निर्धारित की जा सकती है एवं जिसकी अगुआई में प्रत्येक मसले के हल को ढूंढा जा सकता है। इसमें अलग-अलग जातियों, कौमों, नस्लों, भूगौलिक क्षेत्रों से सम्बंधित शख्सियतों की बाणी दर्ज होने के कारण इसमें संपूर्ण लोकाई का मार्गदर्शन करने वाली संभावनाएं स्पष्ट रूप से उपलब्ध हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रत्येक धर्म से संबंधित व्यक्ति को धार्मिक सहनशीलता का उपदेश दिया गया है, ताकि प्रत्येक धर्म से सम्बंधित व्यक्ति अपने धर्म की धार्मिक क्रियाएं स्वतंत्र रूप से कर सके। इसमें धर्म-परिवर्तन के बजाय अपने धर्म में रहने की बात की गई है। यह भी दृढ़ करवाया गया है कि हिंदू और मुसलमान सहित वे सभी लोग मुबारक हैं जो सत्य की स्थापि में लगे हुए हैं तथा सचिआर (सत्यवादी) बनने के लिए प्रयत्नशील हैं :

सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ॥ (पन्ना १४२)

गुरबाणी में दर्ज है कि सम्पूर्ण लोकाई अलग-अलग संप्रदायों, जातियों, नस्लों तथा कौमों में विभक्त होने के बावजूद परमात्मा का अंश होने के कारण एक ही है :

ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई॥
ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई॥२॥
सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन॥
दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन॥३॥ (पन्ना ६७१)

गुरबाणी सभी मनुष्यों को परमात्मा का अंश मानते हुए भेदभाव से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करती है :

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई॥ (पन्ना १२९९)

हमें रासायनिक हथियारों एवं हर प्रकार के प्रकोप से संसार को बचाने के लिए बिना किसी विलम्ब के श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी का संदेश संसार के कोने-कोने में पहुंचाने हेतु प्रयत्नशील होना चाहिए।

आध्यात्मिक उत्कर्ष के शिरोमणि संत : भक्त शेख फरीद जी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

भक्त शेख फरीद जी गजनी के शाही कुल में जन्म लेने बाद भी स्वयं को सांसारिकता के मोह से दूर रखते हुए अध्यात्म के शीर्ष पर पहुंचने वाले महान सूफी संत थे। सन् ११७३ में जिला मुलतान के खोतवाल में जन्म लेने वाले भक्त शेख फरीद जी जब चिश्ती संप्रदाय के ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तिआर काकी के संपर्क में आये तो उनके मुरीद बन गये। बाद में उनके स्थान पर गद्दीनशीन होकर सूफी विचारधारा का बड़ा प्रचार-प्रसार किया। उनमें इतनी विनम्रता व वाणी में इतनी मिठास थी कि हर किसी को अपनी ओर सहज आकर्षित कर लेते थे। उनके इस गुण के कारण ही उन्हें 'गंजे-शक्कर' अर्थात् 'मिष्ठान का खजाना' भी कहा जाता था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित उनकी बाणी में उनके महान व्यक्तित्व की विशालता के सहज ही दर्शन होते हैं। उन्होंने जीवन की कठोर सच्चाइयों पर सूक्ष्म दृष्टि डालते हुए कहा कि जीवन का सार प्रेम-भावना में निहित है, जिसे परमात्मा की शरण में, परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त किया जा सकता है। संसार के सारे भ्रम तोड़ते हुए उन्होंने कहा कि एक परमात्मा ही है जिससे किया गया प्रेम सच्चा होता है :

दिलहु मुहबति जिंन्ह सेई सचिआ ॥
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु
सि कांढे कचिआ ॥१ ॥
रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥
विसरिआ जिन्ह नामु ते भुइ भारु थीए ॥

(पन्ना ४८८)

सच्चे वही हैं जिनके मन में परमात्मा के लिए सच्चा प्रेम है। परमात्मा का प्रेम मन को विकारों, अवगुणों से रहित कर पूर्ण निर्मल कर देता है। मन में शुभ संकल्प जन्म लेते हैं जो जीवन को सार्थक करते हैं। भक्त शेख फरीद जी ने कहा कि ऐसे लोग भी हैं जो बातें तो ज्ञान, सत्य, आदर्श व धर्म की करते हैं, किन्तु उनके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अपना अधिपत्य जमाये बैठे होते हैं। रसना प्रभावी, किन्तु भावना मलिन होती है। ऐसे लोग झूठे होते हैं। वे परमात्मा से दूर हो जाते हैं और धरती पर भार समान अर्थात् मानव समाज के अयोग्य होते हैं। इसके विपरीत परमात्मा के प्रेम में रंग कर भक्ति करने वाले लोगों की शोभा विलक्षण होती है। उन्होंने आगे कहा कि परमात्मा उन्हें स्वयं अपनी शरण में लेकर अपनी कृपा से उनका उद्धार करता है। धन्य हैं वे मातायें, जो ऐसी सन्तान को जन्म देती हैं। उनका मां बनना व सन्तान का जन्म लेना दोनों ही सफल हो जाते हैं।

संसार से प्रेम का मार्ग सरल है, जो पल भर में हो जाता है और पल भर में टूट भी जाता है। जो आज प्रिय हैं कल अप्रिय हो सकते हैं। ऐसे प्रेम

* *ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

की अवधि कितनी होगी, यह बता पाना कठिन होता है। परमात्मा के लिए मन में प्रेम का उत्पन्न होना मनुष्य के आत्म-बल व संकल्प पर निर्भर करता है। मार्ग पर चलने को उत्सुक बहुत-से लोग होते हैं। कुछ लोग बाधाओं की कल्पना से ही विचलित हो जाते हैं और आगे कदम बढ़ाते ही नहीं हैं। कुछ लोग मार्ग पर चलते हैं, किन्तु जब बाधाओं से सामना होता है, भयभीत हो यात्रा को विराम दे देते हैं। बहुत थोड़े लोग हैं, जिनके मन में परमात्मा की प्रीति टूटने न देने का अडिग संकल्प होता है और वे किसी भी कीमत पर इसे बनाये रखने हेतु आगे बढ़ते जाते हैं। उनके लिए उनका लक्ष्य स्पष्ट होता है। उनके लिए जीवन में सबसे मूल्यवान परमात्मा का प्रेम होता है, जिसमें वे अपने जीवन का उद्धार देखते हैं। भक्त शेख फरीद जी ने अपनी बाणी में इसका बहुत सुंदर व सटीक वर्णन किया है।

फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु
नालि पिआरे नेहु ॥
चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥

(पन्ना १३७९)

उपरोक्त सलोक में भक्त शेख फरीद जी ने परमात्मा के मार्ग पर चलने को उत्सुक मन की दुविधा का आभास करने हेतु एक उदाहरण दिया। आपने कहा है कि सामने का सारा मार्ग कीचड़ से भरा हुआ है। जब राह में कीचड़ भरा हो तो मार्ग पर चलना कठिन हो जाता है। कीचड़ में धंसा एक पैर निकल नहीं पाता कि दूसरा पैर भी जा धंसता है। पहले पैर को कीचड़ से निकालने के लिए दूसरे पैर पर अधिक भार डालना पड़ता है, जिससे वह और अधिक धंस जाता है। जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं कठिनाई बढ़ती जाती है। दूसरी विषमता यह है कि कीचड़ के कारण पता ही नहीं चलता कि कहां गड्ढा है, कहां समतल है! भक्त शेख फरीद जी ने कहा कि मार्ग कीचड़ से भरा तो है ही, जहां पहुंचना है वह घर भी बहुत दूर है। चलना अधिक न हो तो कैसा भी कष्ट हो, उठा लिया जाता है, क्योंकि राहत सामने दिख रही होती है। यहां वह स्थिति भी नहीं है। दूर जाना है। तीसरी दुविधा मन में परमात्मा के प्रति प्रेम की है। इस प्रेम की परिपक्वता परमात्मा के घर तक पहुंचने में ही है, भले ही घर दूर है और मार्ग दुष्कर, कीचड़ से भरा हुआ है। परमात्मा से प्रीति रखने वाला अपनी प्रीति की पूर्णता भी चाहता है। इसके ऊपर विपत्ति यह है कि मूसलाधार बरसात भी हो रही है और उसने सांसारिक कर्त्तव्यों का कंबल भी ओढ़ रखा है। यदि वह कीचड़ भरे मार्ग पर चलता है तो उसका कंबल भीगते-भीगते भारी होता जायेगा। उसका चलना और कठिन होता जायेगा। यदि वह अपने ऊपर ओढ़े कंबल को भीगने से बचाने की चिंता करता है, तो मार्ग पर आगे बढ़ नहीं सकेगा। इससे परमात्मा से बंधी प्रेम की डोर टूट जायेगी। इस दुविधा को वह अपने संकल्प व आत्म-बल से तोड़ कर बाहर आ जाता है और हर चुनौती का सामना करने को तत्पर हो जाता है, क्योंकि परमात्मा के प्रेम में ही उसे अपने जीवन की सार्थकता दृष्टिगोचर होने लगती है।

भिजउ सिजउ कंबली अलह वर सउ मेहु ॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥

(पन्ना १३७९)

सांसारिक प्रेम धूप-छांव की तरह होता

है। रंग बदलता रहता है। कभी आकाश पर, तो कभी धरती पर। कब सघन, कब तरल, यह आंकलन कभी संभव नहीं हो पाया है। वर्षों का प्रेम भंग होते देर नहीं लगती। परमात्मा का प्रेम ऐसा नहीं है। इसका रंग जब चढ़ता है तो निरंतर गहरा होता जाता है। यह रंग पक्का व कभी न उतरने वाला होता है। इस प्रेम-रंग को बनाये रखने के लिए वह किसी भी चुनौती का सामना करने, किसी भी त्याग व बलिदान के लिए तैयार रहता है। भक्त शेख फरीद जी ने बादलों को खुला आमंत्रण दिया कि जितना बरसने की चाह रखते हो, आज बरस कर अपनी इच्छा पूरी कर लो! ओढ़े हुए कंबल को अपने जल से जितना चाहे भिगो दो! कंबल भारी हो जाने की कोई चिंता नहीं है। मूसलाधार बरसात के मध्य पूरी तरह भीग कर भारी हो गये कंबल को ओढ़े हुए, यात्रा करते हुए भी यदि प्रियतम से मेल हो जाये व उसके लिए मन में उपजा हुआ प्रेम अक्षुण्ण रहे, तो बड़े से बड़े कष्ट भी सरलता से सहन हो जाते हैं। परमात्मा के मार्ग पर चलने वाला भक्त कितने भी संकट आयें, कितनी बाधाओं का सामना करना पड़े, रंच-मात्र भी नहीं घबराता। वह अपने मार्ग पर आगे बढ़ता रहता है। कष्ट उसे भयभीत नहीं करते। बाधायें उसके उत्साह को मद्धम नहीं कर पातीं। उसके अंतर की प्रेम-भावना इतनी दृढ़ होती है कि सारे दुख गौण हो जाते हैं। भक्त शेख फरीद जी ने कहा कि मनुष्य जिन दुखों से बचना चाहता है उनसे कभी न कभी तो सामना होना ही है। उनसे बचने का विचार एक बड़े भ्रम की तरह है।

फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥
(पन्ना १३७९)

संसार में बहुत-से लोग सत्य (परमात्मा) के मार्ग पर इस कारण नहीं चलते कि इसमें बहुत-सी कठिनाइयां एवं चुनौतियां हैं। बहुत-से त्याग करने पड़ते हैं, अनेक संयम धारण करने होते हैं। भाई गुरदास जी ने भी कहा है कि धर्म तो बाल से भी महीन व खंडे की धार से भी अधिक तीक्ष्ण है। भक्त शेख फरीद जी ने मनुष्य के सामान्य स्वभाव का उदाहरण देकर इसे समझाया है। उन्होंने कहा कि मनुष्य प्रयत्न करता है कि उसके पैर धूल-मिट्टी से गंदे न हो जायें। मिट्टी से बचने हेतु वह जूते पहनता है। उस मार्ग को चुनता है, जो स्वच्छ हो, धूलधूसरित न हो। किन्तु वह कब तक मिट्टी से बच सकता है! वह जीवन भर अपने पैरों को मिट्टी से बचाता फिरता है। एक दिन ऐसा आता है जब उसे कब्र में दफना कर ऊपर मिट्टी डाल दी जाती है। इससे पैर तो क्या, उसका सिर भी मिट्टी में दब जाता है और वह कुछ भी नहीं कर पाता। यदि मनुष्य को एहसास हो जाये कि परमात्मा के मार्ग पर न चलने के उसे क्या परिणाम भुगतने होंगे तो वह अभी से सचेत हो जायेगा। परमात्मा-भक्ति के वर्तमान के दुख उसे दुख नहीं लगेंगे, क्योंकि इन दुखों को सह कर भक्ति करते हुए वह आने वाले बड़े दुखों से बच जायेगा। वह अपने पैरों की नहीं, अपने सिर की चिंता करेगा। इससे सिर बच जायेगा। वह घनघोर बरसात सहन कर लेगा, भीग कर भारी हो गये कंबल का भार निर्वहन कर लेगा, क्योंकि उसे परमात्मा से प्रीति की बनने वाली अवस्था का जो आनन्द प्राप्त होने वाला है, वह अद्‌भुत है। इस

आनन्द के लिए परमात्मा का भक्त अपना सब कुछ अर्पण करने को तैयार हो जाता है।

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
फरीदा कितीं जोबन प्रीति
बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥

(पन्ना १३७९)

यौवन को जीवन का सर्वश्रेष्ठ काल माना जाता है। यौवन में मनुष्य के तन में भरपूर शक्ति होती है, तन निरोग होता है, मन में उत्साह होता है और आँखों में भविष्य के स्वर्णिम सपने होते हैं। कंधे उत्तरदायित्व के बोझ से मुक्त होने के कारण भावनायें मुक्त आकाश में ऊंची उड़ान भरने को समर्थ होती हैं। मनुष्य को लगता है कि सब कुछ उसके वश में है और पूरा संसार उसकी मुठ्ठी में समा सकता है। यह स्वतंत्र जीवन का आरंभ होता है और समाज, संसार की कठोर सच्चाइयों ने अभी राह नहीं रोकी होती है। बल व उत्साह के अतिरेक में वह अति सरलता से माया के आकर्षण में बंध जाता है और विकारों का बंदी बन जाता है। वह अपने सपनों की चमक किसी भी कीमत पर कम नहीं होने देता। वर्तमान काल में तो यौवन का मोह सभी सीमायें व मर्यादायें लांघ गया है। कोई भी स्वयं को यौवन की अगली अवस्था में आ गया स्वीकार ही नहीं करना चाहता। मनुष्य यौवन न रहने के सारे लक्षण मिटा देने में लगा हुआ है। वह सफेद हो रहे बालों को काले रंग से रंगे जा रहा है। झुर्रियां आ गई हैं तो प्लास्टिक सर्जरी करवा रहा है। दवायें खा रहा है। अन्य उपाय कर रहा है कि उसे युवा ही समझा जाये। भक्त शेख फरीद जी ने कहा है कि परमात्मा की प्रीति के आगे ऐसा उमंगों भरा यौवन और यौवन के प्रति प्रबल आग्रह भी कोई मूल्य नहीं रखता, निरर्थक लगता है। परमात्मा के प्रेम का रंग उसे यौवन के उस मोह से बाहर निकाल लाता है जो मनुष्य व परमात्मा के बीच बाधक हो। वह यौवन के आने अथवा जाने से बेपरवाह हो जाता है और पूरा ध्यान परमात्मा की भक्ति में लगाता है। वह यौवन की सारी उमंगें परमात्मा-प्रेम पर अर्पण कर देता है। उम्र उसके चिन्तन का विषय नहीं बनती है। भक्त शेख फरीद जी ने दूसरी अति महत्वपूर्ण बात कही है। उन्होंने कहा है कि यौवन आनन्द व प्रफुल्लता का काल है, ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए। यह भ्रम है। संसार में बहुत-से लोग ऐसे देखे जाते हैं जो युवा हैं, बल, उत्साह व ऊर्जा से भरपूर हैं, किन्तु इसके बावजूद दुख भोग रहे हैं, क्योंकि उनके अंदर परमात्मा के लिए प्रेम नहीं है। परमात्मा से दूर होना ही दुखों का कारण होता है। जो गुरबाणी को विस्मृत कर देता है उसकी अवस्था उस चिर काल-से रोगग्रस्त रोगी जैसी हो जाती है, जो अपने रोग की गंभीरता से हताश व निराश हो उच्च स्वर में विलाप करता रहता है। मन में परमात्मा के लिए भावना न होने से जीवन का श्रेष्ठ काल भी निरर्थक व आनन्द-विहीन हो जाता है।

जीवन उद्देश्यहीन नहीं हो सकता। किसी ने माया को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है, कोई परमात्मा की प्रीति की पूर्णता चाहता है। मनुष्य अपने अनुसार अपना हित देख रहा है। संसार में माया का प्रभाव इतना गहरा है कि उससे मुक्त होना बहुत ही कठिन है।

फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥

(पन्ना १३८०)

भक्त शेख फरीद जी ने संसार का कठोर सच प्रकट करते हुए कहा कि जो माया-मोह में रमे हुए हैं, उनका इस मोह से बाहर निकलना आसान नहीं होता। उन्हें कितने भी कष्ट उठाने पड़ें, माया में ही उन्हें अपना हित नज़र आता है। वे सच को देख नहीं पाते और माया को ही सच मान लेते हैं। माया का मोह उनके रक्त में संचरित होता रहता है। माया में रमे लोग अपमानित होते रहते हैं, दंड भोगते रहते हैं, फिर भी कुमार्ग से नहीं हटते। एक के बाद एक पाप करते जाते हैं। भक्त शेख फरीद जी ने कहा कि ऐसे लोगों के तन को काट भी डाला जाये तब भी माया से उनका मोह भंग नहीं होगा। तन कटने की बाद भी रक्त से माया का मोह नहीं निकलेगा अर्थात् माया का मोह एक बार घर कर गया तो उससे मुक्त होने का कोई भी प्रयत्न कारगर सिद्ध नहीं होता। सुखमनी साहिब बाणी में श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि मनुष्य कितने भी यत्न कर ले, जैसे आत्म-शुद्धि के लिए पूरी धरती की यात्रा कर ले, लंबी आयु प्राप्त कर ले जैसे योग द्वारा योगी किया करते हैं, अग्नि-कुंड रच कर बड़े यज्ञ कर ले, सोना, ऊँची नस्ल के घोड़े, जमीन आदि श्रेष्ठ माने जाने वाले दान कर ले, कठोर मुद्रायें, आसन कर ले, ऐसे कठिन संयम धारण करे जैसे जैन धर्म में होते हैं, फिर भी कुछ नहीं प्राप्त होगा। वह इससे अधिकतम भी कर ले।

निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥

(पन्ना २६५)

श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि किसी प्राप्ति हेतु मनुष्य के वश में अधिकतम यह है कि वह अपने तन को अर्पण कर दे। अपने तन के टुकड़े-टुकड़े करवा ले, किन्तु मन की मैल, विकार तब भी पीछा नहीं छोड़ते। एक ही उपाय है— परमात्मा का नाम जपना, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है। इसके समतुल्य कुछ भी नहीं है। भक्त शेख फरीद जी ने इसे अपने निराले ढंग से संसार को समझाया है।

जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥

(पन्ना १३८०)

भक्त शेख फरीद जी ने परमात्मा के लिए प्रेम-भावना को भक्ति के सिंहासन पर बैठाते हुए कहा कि यदि मन परमात्मा के प्रेम में रमा हुआ है तो माया व विकार उसे स्पर्श तक नहीं कर सकते हैं। ढूंढने से भी उसके अंदर कुविचार नहीं मिलते। संसार में जहां परमात्मा को पाने के लिए तन को बड़े से बड़े कष्ट दिये जा रहे थे कि परमात्मा शायद इससे प्रसन्न हो जाये, भक्त शेख फरीद जी ने इसे एक नया आयाम दिया। उन्होंने अपने शरीर की भी चिंता की और इसका कारण भी बताया।

कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥

(पन्ना १३८२)

भक्त शेख फरीद जी ने कल्पना की कि परमात्मा के भक्त का शरीर निष्प्राण हो गया है। शव यदि खुले स्थान पर पड़ा हो, तो चील, कौवे उसे खाने के लिए आ जाते हैं। परमात्मा के भक्त की भावना तन से प्राण निकल जाने के बाद भी समाप्त नहीं होती है, क्योंकि वह पक्की व सदैव

स्थिर रहने वाली है। इस भावना के कारण उसे मृतक शरीर की भी चिंता होती है। यह भावना आने वाले कौवों को तन को आहार बनाने से रोकती है। यदि कोई कौवा भूले-बिसरे आ भी बैठा है तो उसे उड़ जाने को कहती है, क्योंकि इस तन में परमात्मा की प्रीति निवास कर रही है। भाव यह कि परमात्मा से की हुई प्रीति कभी नाश नहीं होती, सदैव बनी रहती है। तन में प्राण भले न हों, परमात्मा की प्रीति जीवित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्ण बाणी में भावना ही मुखर है, जिसे भिन्न-भिन्न उदाहरणों द्वारा समझाया गया है। भक्त शेख फरीद जी जिस सूफी परंपरा के चिश्ती संप्रदाय से आते थे उसका प्रेम का ढंग अलग ही आभा बिखेरने वाला था। उनकी बाणी व जीवन दोनों ही गहरे प्रेम के प्रतीक थे। श्री गुरु नानक साहिब ने अपने पंथ को ही प्रेम का पंथ कहा था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि प्रेम से ही परमात्मा की शरण प्राप्त होती है। भक्त शेख फरीद जी ने कहा कि परमात्मा को पाने के लिए भिन्न दृष्टि चाहिये।

एनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ॥
फरीदा लोकां आपो आपणी मै आपणी पई ॥

(पन्ना १३८२)

संसार में बहुत कुछ चल रहा है। सभी जीवन को अपनी दृष्टि से देख रहे हैं और अपने ढंग से जीवन जी रहे हैं। सभी को अपनी सोच अच्छी लगती है और सभी के पास अपने कर्मों का औचित्य है। कितनी ही विचारधारायें हैं, विधियां हैं और सुख-दुख की व्याख्यायें हैं। इस भांति जीवन व्यतीत करने वाले असंख्य लोग संसार में आये और चले गये। सभी ने अपनी सोच की चिंता की और अपनी जीवन-शैली का निर्वाह किया। भक्त शेख फरीद जी ने कहा कि लोगों ने जो भी सोचा, किया अथवा कर रहे हैं, उसका मुझ पर अर्थात् परमात्मा के भक्त पर कोई प्रभाव नही पड़ता। वह अपने मार्ग की चिंता करता है, उस पर अपना ध्यान एकाग्र करता है और आगे बढ़ता जाता है। संसार को देख कर वह अपनी दृष्टि नहीं बदलता है। उसकी यह अवस्था अंत तक बनी रहती है। परमात्मा में रमे हुए मन की परमात्मा-दर्शन की आस कभी नहीं टूटती।

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥

(पन्ना १३८२)

एक स्थान पर भक्त शेख फरीद जी अपने निष्प्राण तन की चिंता करते हैं कि कौवे उसे न खायें, क्योंकि उसमें परमात्मा की अविनाशी भावना बसती है। उपरोक्त वचन में वे तन की चिंता भी त्याग देते हैं। भक्त शेख फरीद जी विचार करते हैं कि कौवों ने ढूंढ-ढूंढ कर तन का सारा मांस खा लिया है। परमात्मा-प्रेम की भावना इससे भी प्रभावित नहीं होती है। परमात्मा मिलन की आस अभी भी नहीं टूटी है। वह कौवों से विनती करती है कि तन का सारा मांस तो खा लिया है अब दो नेत्र जो बचे हुए हैं, उन्हें छोड़ दें, उन्हें कोई हानि न पहुँचायें, क्योंकि इन नेत्रों में परमात्मा का दर्शन कर सकने की आस अभी भी बची हुई है। परमात्मा-प्रेम की गहराई और प्रखरता का इससे अधिक सुंदर उदाहरण कोई और नहीं हो सकता। अपनी भक्ति, भावना को मनुष्य अपनी सबसे मूल्यवान विरासत मानता है और इसे सुरक्षित रखने के लिए वह कुछ भी

करने को तत्पर रहता है। इसके समक्ष उसका अपना जीवन भी गौण हो जाता है। वह इस प्रीति के लिए ही जीवन जीता है और इस प्रीति के लिए ही जीवन-त्याग करता है।

भक्त शेख फरीद जी ने अपनी बाणी में प्रेरणा दी कि मनुष्य को संसार की मोह-माया, विकारों को तार-तार कर स्वयं से अलग कर देना चाहिये व ऐसा जीवन जीना चाहिये जिससे मन परमात्मा में रमता हो, मन में उसके प्रेम की भावना दृढ़ होती हो। यह जीवन वास्तव में भक्ति-भावना के लिए ही प्राप्त हुआ है। उसके लिए मनुष्य को जितने भी दुख, कष्ट उठाने पड़ें, पीछे नहीं हटना चाहिये। यह तो मनुष्य के जीवन की मुख्य गतिविधि है। जीवन में यदि परमात्मा का प्रेम व भक्ति नहीं है, तो ऐसा जीवन निरुद्देश्य है। परमात्मा का सच्चा भक्त परमात्मा के प्रेम के लिए ही जीवन जीता है :

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै
सो तनु जाणु मसानु ॥

(पन्ना १३७९)

परमात्मा से प्रेम की बात करने वाले तो बहुत-से लोग हैं। धर्म के मार्ग पर चलने वाले सभी लोग परमात्मा से प्रेम का दावा करते हैं, किन्तु उनके जीवन में ऐसा दिखता नहीं है। परमात्मा से प्रेम का अर्थ है कि मनुष्य की संपूर्ण सोच, सारे आचार-व्यवहार में यह प्रेम प्रकट हो। किसी राज्य का राजा जब शक्तिशाली होता है तो पूरे राज्य के हर क्षेत्र की हर गतिविधि पर उसका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। नागरिक को देखते ही पता चल जाता है कि इस देश का राजा कैसा है। इसी तरह भक्त की भक्ति को देख कर ही बताया जा सकता है कि उसकी भावना कैसी है। परमात्मा के प्रेम को सर्वोपरि मानने वाले भक्त का जीवन विलक्षण होता है। वह सदैव परमात्मा के प्रेम में व्याकुल रहता है और सर्वत्र परमात्मा की व्यापकता के दर्शन करता है। परमात्मा का नाम जपते ही उसके मन को संतोष व धैर्य प्राप्त होता है। भक्त शेख फरीद जी ने कहा कि जिस मनुष्य के अंदर परमात्मा के लिए व्याकुलता नहीं है उसका तन शमशान के समान है। जिसका जीवन परमात्मा के प्रेम के अधीन है उसके लक्षण भी भक्त शेख फरीद जी ने बताये हैं :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु
जिहबा मणीआ मंतु ॥
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥

(पन्ना १३८४)

जिसके जीवन में विनम्रता है, क्षमाशीलता है, वाणी में सत्यता है, यह प्रमाण है कि उसका जीवन परमात्मा के प्रेम से संचालित होता है। परमात्मा का प्रेम जीवन को इन गुणों से सुसज्जित कर देता है। ये गुण ही परमात्मा के निकट ले जाते हैं। भक्त शेख फरीद जी का जीवन इन्हीं गुणों का प्रतीक था, जिससे उनका बहुत सम्मान था।

भक्त शेख फरीद जी की बाणी का मानव-जीवन पर प्रभाव

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सूफी विचारधारा के अग्रणी प्रचारक भक्त शेख फरीद जी को पंजाबी भाषा का प्रथम कवि माना जाता है। भक्त शेख फरीद जी ने अपनी बाणी में पंजाबी के ठेठ, सरल-सहज रूप को, पंजाबी के मुहावरों, लोकोक्तियों को बाखूबी पेश किया है। इनकी बाणी में पंजाबी भाषा के परिष्कृत, उत्तम स्वरूप के दर्शन कर मन गदगद हो उठता है। भक्त शेख फरीद जी ने पंजाबी भाषा को जनमानस की भाषा बनाने का जो काम किया है, वह अति प्रशंसनीय, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ तथा अवलोकनीय है। इनके द्वारा उच्चरित सलोक लोकोक्तियों का रूप धारण कर चुके हैं।

भक्त शेख फरीद-उद-दीन शकरगंज जी का जन्म गांव खोतवाल, ज़िला मुलतान, पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) में सन् ११७३ ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम शेख जमालुद्दीन और माता का नाम बीबी कुरशम था। जब भक्त शेख फरीद जी की आयु डेढ़ वर्ष की थी, तब इनके पिता जी परलोक गमन कर गए थे। इनकी माता जी ने ही इनका पालन-पोषण किया और इन्हें धार्मिक विद्या प्रदान की। प्राथमिक शिक्षा अपनी माता जी से प्राप्त करने के बाद इन्होंने कुरान मजीद (पवित्र ग्रंथ) मौलाना अबू हाफिज़ से पढ़ा। तदोपरांत भक्त शेख फरीद जी बगदाद चले गए। वहां इन्होंने अब्दुल कादिर गिलानी तथा ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती एवं शेख किरमानी से आगे की धार्मिक शिक्षा प्राप्त की।

भक्त शेख फरीद जी बगदाद से सन् ११९४ ई. में अपने मुशिदि हज़रत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी द्वारा प्रेरित करने पर दिल्ली चले आए। काकी जी के पास कुछ वर्ष व्यतीत करने के बाद ये हिसार (हरियाणा) में भी रहे। फिर ये पाकपटन (पाकिस्तान) चले गए। यहां पर इन्होंने अपना एक जमातखाना स्थापित कर लिया। यहां से इनका दिल्ली आना-जाना होता रहता था। सन् १२१५ ई. में दिल्ली से लौटते समय ये कुछ दिनों के लिए मोकलहर (फरीदकोट) नगर में भी रहे। एक कथा के अनुसार उस समय मोकलहर रियासत के हाकिम आस-पास के क्षेत्र के लोगों से निर्माणाधीन किले को पूरा करने के लिए बेगार (मुफ्त में काम) जबरदस्ती करवाया करते थे। एक दिन राजा के प्रशासक (हाकिम) सूफी फकीर भक्त शेख फरीद जी को भी इस काम के लिए पकड़ लाए। भक्त शेख फरीद जी उस वक्त नाम-सिमरन में लीन थे। इस स्थान को आजकल 'गोदड़ी साहिब बाबा फरीद जी' कहा जाता है।

भक्त शेख फरीद जी को भी गारा, मिट्टी आदि उठाने के काम में लगा दिया गया। उन्हें पहचान कर एक शख्स ने जाकर राजा को बता दिया कि बेगार कर रहे लोगों में एक ऐसा महान सूफी संत भी शामिल है, जो रूहानी शक्तियों का मालिक है, प्रभु के नाम का गुणगान करने वाला

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

है, धर्म के मार्ग पर लोगों की आगवानी करने वाला है। राजा को अपने हाकिमों की गुस्ताखी पर शर्मिंदा होना पड़ा। राजा ने हाथ जोड़कर भक्त शेख फरीद जी से क्षमा-याचना की और अपने नगर मोकलहर का नाम बदलकर इन्हीं को समर्पित कर 'फरीदकोट' रख दिया अर्थात् 'फरीद का कोट (दुर्ग)'। तब से यह शहर 'फरीदकोट' नाम से जाना जाता है।

भक्त शेख फरीद जी के समय में इसलामिक गणराज्य अभी नया-नया ही स्थापित हुआ था। हिंदुओं की संख्या बहुत ज्यादा थी और अन्य कोई विशेष धर्म अभी अस्तित्व में नहीं आया था। जैन धर्म और योग मत को मानने वालों की संख्या भी कम ही थी। मुसलमान राजाओं ने अपने धर्म का प्रचार ज़ोर-शोर से करना शुरू कर दिया तथा उन्होंने धर्म-परिवर्तन को भी काफी प्रोत्साहित किया। डर के मारे तथाकथित निम्न जाति के लोग इसलाम धर्म ग्रहण करने लगे। धर्म के नाम पर नवाब और जागीरदार भी जालिम राजाओं को खुश करने हेतु आम लोगों पर जुल्म ढहाने लगे। यह देख भक्त शेख फरीद जी का मन बहुत दुखी हुआ। उनके मुताबिक जो ज़िंदगी शक्कर के समान मीठी व आनंदमयी होनी चाहिए, वह ज़हर के समान कड़वी व दुश्वार हो गई है। ऐसे में अपनी वेदना किससे कही जाए? साँई अथवा प्रभु के बिना और किसे अपना दुख सुनाया जाए?

देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ॥
सांई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ॥
(पन्ना १३७८)

भक्त शेख फरीद जी की बाणी राजाओं तथा उनके हाकिमों के जुल्म एवं स्वार्थी चरित्र, निकृष्ट आचरण की भर्त्सना करती है। उन्हें नेक बनने, मीठा बोलने और लालच से बचने की हिदायत देती है। भक्त शेख फरीद जी धर्म की आत्मा को समझते थे। वास्तव में अन्य धर्मों की तरह इसलाम भी समानता, भाईचारा, प्रेम, सद्भावना का संदेश देता है। इन्होंने सूफी रंग से लबरेज़ अपने विचारों से उस समय के समाज को तो प्रभावित किया ही, इनकी बाणी आज तक लोकमानस का मार्गदर्शन करती आ रही है और सदैव करती रहेगी। इनकी सूफी विचारधारा गुरमति विचारधारा के काफी करीब है, इसीलिए श्री गुरु नानक देव जी ने इनकी बाणी को संभालने का काम किया, इसे मान-सम्मान दिया।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी उदासियों (धर्म प्रचार-यात्राओं) पर रवाना होने से पहले उन महापुरुषों, भक्तों, संतों को लक्षित (चिन्हित) कर लिया था, जिन्होंने उनसे पूर्व मानवीय एकता, भाईचारा, धर्म, प्रभु-भक्ति और परस्पर सद्भावना की ज्योति जलाए रखी थी। विभिन्न स्थानों पर पहुंचकर गुरु साहिब जी ने उनकी बाणी को एकत्र कर संभाल लिया। भक्त शेख फरीद जी, भक्त रविदास जी, भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी ऐसे ही महापुरुष थे, सच्चे भक्त थे।

गुरमति विचारधारा के चिंतक, विद्वान और लेखक डॉ. धरम सिंघ लिखते हैं :—

''भक्त शेख फरीद जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकारों में से एक बाणीकार हैं। बारहवीं शताब्दी (११७३-१२६६ ई.) में सूफियों की चिश्ती संप्रदाय से संबंधित भक्त शेख फरीद जी तथा इनकी बाणी कई पक्षों से महत्त्वपूर्ण है। वे

पंजाबी जुबान के सबसे पहले प्रमाणिक बाणीकार होने के साथ-साथ पंजाबी सूफी काव्य के प्रवर्तक हैं। इन्होंने पंजाबी पद्य के तथ्य निर्धारित किए, जो पूर्व पंजाबी काव्य का आधार बने। भक्त शेख फरीद जी की बाणी, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है, इतनी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई है कि आदर्श के रूप में मानी जाती है। इनकी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज होने से धार्मिक, साहित्यक, भाषाई और सभ्याचारक विरासत का अंग बन गई है।''

भक्त शेख फरीद जी के पूर्व काल में लोग अज्ञानता के कारण पलायनवादी थे। वे योग व सन्यास को प्रभु-प्राप्ति का उचित मार्ग समझते थे। गृहस्थी जीवन को त्यागकर वे जंगलों या पहाड़ों की ओर चले जाते थे। भक्त शेख फरीद जी ने इस संबंध में फरमान किया है :

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि
वणि कंडा मोड़ेहि॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि॥
(पन्ना १३७८)

भक्त शेख फरीद जी की बाणी ने लोगों के आचरण व चरित्र को सुधारने तथा उनकी मानसिकता को बदलने का महत्त्वपूर्ण काम किया है। इनकी बाणी ने लोगों में स्वाभिमान, प्रेम, सेवा, सहिष्णुता, भाईचारा और आत्मसम्मान जैसे गुण पैदा किए। किसी के सहारे जीवन व्यतीत करने को ये अच्छा नहीं समझते थे :

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा
सांई मुझै न देहि॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि॥
(पन्ना १३८०)

भक्त शेख फरीद जी मनुष्य को समझाते हुए फरमान करते हैं कि यदि तू स्वयं को बहुत 'अकलि लतीफु' (बुद्धिमान) समझता है तो बुरे कर्मों द्वारा काले लेख (बुरा भाग्य) क्यों लिख (निर्मित कर) रहा है? स्वयं में नम्रता पैदा कर! अहंकार को छोड़ और अपने 'गिरीवान' (अंदर) में झांककर देख अर्थात् खुद का अवलोकन कर और अपनी कमियों एवं बुराइयों को दूर कर!

फरीदा जे तू अकलि लतीफु
काले लिखु न लेख॥
आपनड़े गिरीवान महि
सिरु नींवां करि देखु॥ *(पन्ना १३७८)*

भक्त जी फरमान करते हैं कि ए मानव! अब तो तेरी दाढ़ी का रंग बदल चुका है। यह सफेद हो चुकी है। यूं समझ कि तेरा अंतिम समय निकट आ रहा है और तेरा अतीत (बीत चुका जीवन) पीछे रह गया है। अगर तूने इससे पहले कोई धर्म-कर्म का काम नहीं किया है, तो अब कर ले! प्रभु-भक्ति नहीं की है, तो अब कर ले! अपना जीवन सुधार ले!

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर॥
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि॥
(पन्ना १३७८)

भक्त शेख फरीद जी की बाणी हमें जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर सही व सच्ची आगवानी प्रदान करती है, ज्ञान की ज्योति प्रदान करती है, सचेत, सहज तथा सरल रहकर जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देती है। भक्त शेख फरीद जी के जीवन-दर्शन और बाणी का मानवीय जीवन पर प्रभाव बहुत गहरा है। यह युगों-युगों तक कायम रहने वाला है।

माता सुलक्खणी जी

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

लोक-कल्याण के लिए जिन महापुरुषों और सांस्कृतिक महानायकों ने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया, उनके जीवन और महान कार्य में उनकी धर्म-पत्नियों का योगदान भी कुछ कम नहीं है। महापुरुषों की ये सहधर्मिणियां अधिकांशत: अप्रसिद्ध और अल्पज्ञात रह गईं, जबकि लोक-कल्याण में इनकी भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी, जितनी इनके महापुरुष पतियों की रही है।

जगत्-उद्धारक, महान गुरु साहिब श्री गुरु नानक देव जी की सुपत्नी माता सुलक्खणी जी भी एक ऐसी ही महान् नारी हैं, जिन्होंने पृष्ठभूमि में रहते हुए गुरु जी के लोक-कल्याणकारी कार्यों में उत्कृष्ट सहयोग किया।

पहले सन् १४८७ से १४९७ ईस्वी तक तलवंडी और सुल्तानपुर लोधी में गुरु जी के साथ रहकर, फिर सन् १४९७ से १५२२ ईस्वी तक गुरु जी की उदासियों के समय परिवार का पालन-पोषण करते हुए और फिर सन् १५२२ से १५३९ ई. तक श्री करतारपुर साहिब में श्री गुरु नानक देव जी के महान् कार्यों में साथ देते हुए माता सुलक्खणी जी ने अपने कर्त्तव्य का सर्वश्रेष्ठ पालन किया।

जन्म एवं बालपन : माता सुलक्खणी जी का जन्म ज़िला गुरदासपुर के गांव 'पक्खोके रंधावा' में हुआ। आपके पिता का नाम श्री मूलचंद जी और माता का नाम माता चंदो जी था। माता सुलक्खणी जी के जन्म के विषय में कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती। संभवत: माता सुलक्खणी श्री गुरु नानक देव जी से चार-पांच वर्ष छोटे ही रहे होंगे। गुरु साहिब का अवतरण सन् १४६९ ईस्वी में हुआ था। इस हिसाब से माता सुलक्खणी जी का जन्म-वर्ष सन् १४७३ या १४७४ ईस्वी होना चाहिए। माता सुलक्खणी जी का बालपन गांव पक्खोके में ही बीता।

गुरु जी से विवाह : श्री गुरु नानक देव जी और माता सुलक्खणी जी का विवाह बटाला शहर में सन् १४८७ ईस्वी में हुआ।

गुरु जी के ससुर श्री मूलचंद जी का घर जिस स्थान पर था और जहां गुरु जी के विवाह की रस्में पूरी हुई थीं, अब वहां गुरुद्वारा डेहरा साहिब सुशोभित है।

इसी प्रकार जिस स्थान पर गुरु जी की बारात आकर ठहरी थी, वहां अब गुरुद्वारा कंध साहिब शोभायमान है। यहां एक कच्ची दीवार है, जिसे शीशे में मढ़ दिया गया है। यह दीवार गुरु साहिब के समय की ही है। रिवायत है कि जब यहां गुरु जी की बारात आकर ठहरी तो एक

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

बूढ़ी माई ने कहा कि ''पुत्र! इस कच्ची दीवार से बच कर रहना, कहीं ढहकर ऊपर न आ गिरे!'' तब गुरु जी ने वचन किया, ''माता! यह दीवार कभी नहीं ढहेगी।'' गुरु साहिब के वचन सदका यह प्राचीन जर्जर दीवार आज भी अवशेष रूप में कायम है।

श्री गुरु नानक देव जी और माता सुलक्खणी जी के विवाह का यह उत्सव 'बाबे दा विआह' जोड़-मेले के रूप में आज भी बटाला शहर में अगस्त-सितंबर महीने में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

बाद में छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी का 'अनंद कारज' भी शहर बटाला में ही हुआ। इस स्थान पर अब 'गुरुद्वारा साहिब सतिकरतारिआ' सुशोभित है।

पुत्रों का जन्म : विवाह के पश्चात माता सुलक्खणी जी स्वाभाविक रूप से अपनी ससुराल राय भोय दी तलवंडी में आ गए। यहां माता सुलक्खणी जी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। सन् १४९४ ईस्वी में बाबा श्रीचंद जी का और सन् १४९७ ईस्वी में बाबा लखमी दास जी का जन्म हुआ।

माता सुलक्खणी जी ने बड़ी ममता से पुत्रों का लालन-पालन किया।

उदासियों के समय गुरु-परिवार की देखभाल : सन् १४९७ ईस्वी से श्री गुरु नानक देव जी ने लोक-कल्याण हेतु उदासियां करने का निर्णय लिया। माता सुलक्खणी जी ने पति की आज्ञा शिरोधार्य करके परिवार की देखभाल का कार्य संभाला। माता सुलक्खणी जी ने सन् १५२२ ईस्वी तक गुरु जी की उदासियां सम्पूर्ण होने तक परिवार का लालन-पालन और भरण-पोषण कर अपनी जिम्मेदारियों को बाखूबी निभाया।

श्री करतारपुर साहिब में निवास : चारों उदासियां संपूर्ण करके जब श्री गुरु नानक देव जी ने श्री करतारपुर साहिब को अपना कार्य-स्थल बनाया, तो माता सुलक्खणी जी भी सेवा में सहभागी बने। यहां माता जी अंत समय तक गुरु जी के साथ रहे।

भाई लहिणा जी को गुरुआई : जब श्री गुरु नानक देव जी ने अपने पुत्रों के स्थान पर भाई लहिणा जी अर्थात् श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुआई सौंपने का निर्णय लिया तो माता सुलक्खणी जी ने पुत्र-मोह का सर्वथा त्याग करते हुए गुरु जी के निर्णय को सही ठहराया।

देहावसान : जन्म-साखियों में दर्ज़ प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि श्री करतारपुर साहिब में श्री गुरु नानक देव जी के ज्योति-जोत समाने के समय माता सुलक्खणी जी उनके निकट उपस्थित थीं। यह भी लगभग स्पष्ट ही है कि माता सुलक्खणी जी का देहावसान गुरु जी के ज्योति-जोत समाने के बाद श्री करतारपुर साहिब में ही हुआ।

ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ १ ॥
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ
एह सुमति साधू ते पाई ॥ (पन्ना १२९९)

गुरबाणी के पावन सिद्धांतों को मन-वचन-कर्म से अमल में लाने वाले, सेवा की अद्वितीय मिसाल, श्वास-श्वास सिमरन में व्यतीत करने वाले, अमनदूत, ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी का जन्म माता सुंदरी जी तथा पिता श्री नत्थूराम खत्री के घर जिला सियालकोट (पाकिस्तान) में हुआ। बचपन से ही वे उदासी एवं वैरागी प्रवृत्ति के थे। जरूरतमंदों की सेवा करना, संतों-महात्माओं की संगत करनी उनकी दिनचर्या थी। उनकी परोपकारी प्रवृत्ति से पिता जी बहुत प्रभावित थे। ईश्वर की कृपा-दृष्टि से घर में कोई कमी नहीं थी। पिता जी ने अपने पुत्र को इस दिशा में बहुत सहयोग किया। इतिहासकारों के अनुसार, उनके पिता जी ने उनके दयालु स्वभाव को देखते हुए सेवा-कार्यों हेतु एक अलग कमरा बनवा दिया और कहा कि जो भी जरूरत हो, जितनी चाहो जरूरतमंदों की मदद कर सकते हो। फिर क्या था, भाई घन्हईआ जी की मुराद पूरी हो गई। तन-मन-धन से सेवाभावी कार्यों को समर्पित जान बाल्य-काल से ही सर्वत्र उनका आदर-सत्कार तथा कीर्ति होने लगी।

मैंने कुछ वर्ष पूर्व एक पंजाबी पुस्तक में लेख पढ़ा था, जिसमें लिखा था कि एक दिन सिमरन में लीन भाई घन्हईआ जी ने महसूस किया कि हृदय से आवाज़ आ रही है, क्यों न श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन किए जाएं! तब संगत के साथ श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन के लिए चल पड़े। गुरु जी के दर्शन करते ही आभास हुआ कि यहां अवश्य मेरा कल्याण होगा। वहां तबेले में गुरु जी के घोड़ों की सेवा में तन-मन से जुट गए। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर गुरु जी स्वयं उन्हें दर्शन देने के लिए गए तथा कृतार्थ किया। भाई घन्हईआ जी गुरु-चरणों में नत्मस्तक हुए, तो गुरु जी ने उन्हें चरणों से उठा कर छाती से लगाया और आशीर्वाद दिया कि ''तुम्हें प्रभु के घर से नाम व सेवा की दात मिली है। इसे कमाओ तथा दूसरों में भी बांटो!'' श्री गुरु तेग बहादर साहिब का आशीर्वाद पाकर गुरु साहिब के वचनों का पालन करते हुए लोगों को सेवा और सिमरन से जोड़ते हुए जब श्री अनंदपुर साहिब से अपने

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

इलाके की ओर आ रहे थे, तो राह में अटक के निकट कवेह नामक स्थान पर प्यास लगने के कारण रुके और प्यास बुझाने हेतु किसी से पानी मांगा तो पता चला कि वहां पानी की बहुत किल्लत है। वहां के लोगों को पानी लाने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है। प्राणी-मात्र की सेवा को ईश्वर की सेवा मानने वाले भाई घन्हईआ जी ने घर जाने का विचार छोड़ कर वहीं रहकर लोगों की जल-सेवा करने का मन बना लिया। कवेह से कुछ दूरी पर एक नदी थी। वहां से घड़ा भर कर लाते और लोगों को पानी पिलाते। जैसे ही घड़ा खाली होता, पुनः भर लाते। सारा दिन यही क्रम चलता रहता। इस प्रकार निष्काम सेवा करते हुए उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैलने लगी। कुछ समय पश्चात् वह स्थान धर्मशाला में परिवर्तित हो गया। अपने अथक प्रयास से वहां भाई घन्हईआ जी ने एक कुआं खुदवा दिया। तीन-चार वर्ष तक सेवा-प्रवाह चलता रहा।

इसी दौरान एक दिल दहला देने वाली खबर सन् १६७५ ई. में भाई घन्हईआ जी को मिली। पेशावर के मसंद ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब की अद्वितीय शहादत की खबर जब भाई घन्हईआ जी को सुनाई तो उनका मन वैराग से भर गया। मन में संकल्प उठा कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन किए जाएं। यह भावना बनते ही आप संगत के साथ सिक्खी का प्रचार करते हुए श्री अनंदपुर साहिब पहुंच गए। सिमरन और सेवा-भाव से परिपूर्ण रूह भाई घन्हईआ जी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं अपने पास बुलाया। गुरु जी के दीदार और चरण-रज़ प्राप्त कर भाई घन्हईआ जी निहाल-निहाल हो गए। वहां पर भी गुरु जी ने आपको लंगर में जल की सेवा करने का आदेश किया। गुरु जी का आदेश पाते ही आप मशक लेकर लंगर में जल की सेवा करने में मगन हो गए।

लंगर में जल की सेवा निभाते हुए कुछ ही समय व्यतीत हुआ था कि मुगलों के साथ युद्ध प्रारंभ हो गया। इस दौरान भाई घन्हईआ जी को घायलों को पानी पिलाने की सेवा सौंपी गई। यह थी असल में परीक्षा की घड़ी। विकट परिस्थितियों में किले की घेराबंदी कर दी गई। परिणामस्वरूप बाहर से आने वाला रसद-पानी पूर्णतया बंद हो गया। युद्ध की विभीषिका, अन्न-जल का अभाव, मौत का ताण्डव, चारों ओर भयावह युद्ध के परिणामस्वरूप घायलों का चीत्कार। ऐसे विकट समय में मसीहा बने सब में ईश्वर की ज्योति को पहचानने वाले ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी। गुरु पातशाह द्वारा प्रदत्त सेवा को निरवैर-भाव से, पूर्ण निष्ठा के साथ निभा रहे थे। जिधर से आवाज आती— पानी! उधर तत्काल दौड़ पड़ते। अपने हाथों से, प्रेम-भाव से उस घायल को पानी पिलाते। मरणासन्न हुए घायलों में मानों पुनः प्राण लौट आते। सिमरन और सेवा में मगन भाई घन्हईआ जी को न तो अपनी सुध-बुध रहती और न ही कभी यह ख्याल आता कि पानी मांगने वाला

हिंदू है या मुसलमान है या सिक्ख। ऐसी संकीर्ण सोच से भाई घन्हईआ जी बहुत दूर जा चुके थे। मानवतावादी दृष्टिकोण, गुरु-दर्शाए मार्ग के मन-वचन-कर्म से अनुगामी, 'नर-सेवा, नारायण-सेवा', इस भाव से अपने कर्त्तव्य का पूरी निष्ठा के साथ पालन करने वाले भाई घन्हईआ जी पर सिक्ख सिपाही क्रोधित होते कि ये तो हमारी सारी मशक्कत पर पानी फेर देते हैं। भला दुश्मनों को भी कोई पानी पिलाता है! हमारे दुशमन हमारे आदमी से पानी पीकर हमारे ही खिलाफ लड़ने लायक हो जाते हैं।

भाई घन्हईआ जी की यह सेवा-भावना आम सिक्खों की समझ से परे थी। उन्होंने जाकर गुरु जी से भाई घन्हईआ जी की शिकायत कर दी। गुरु जी ने भाई घन्हईआ जी को अपने पास बुलाया और कहा, ''हमने सुना है कि तुम रणभूमि में घायल दुश्मनों को भी पानी पिलातो हो?'' विनम्रतापूर्वक जवाब था— ''नहीं महाराज!'' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी घट-घट की जानने वाले पुन: सवाल करते हैं— ''भाई घन्हईआ जी! तुम तुर्कों को भी जल पिलाते हो! गद्दार पहाड़ियों को भी जल पिलाते हो!'' भाई घन्हईआ जी का इस बार बड़ा प्यारा जवाब था— ''नहीं मेरे मालिक! मैं इनमें से किसी को भी जल नहीं पिलाता। मैं तो केवल और केवल रब के बंदों को ही जल पिलाता हूं। मुझे जिधर से भी 'पानी' के लिए आवाज आती है, मैं उसके पास जाता हूं। मुझे हरेक घायल में से आपके दीदार होते हैं, आपका ही नूरानी चेहरा नज़र आता है। मैं तो बस, आपको ही पानी पिलाता हूं।'' ऐसी अद्वैत-भावना, समदृष्टि अद्‌भुत है। किसी विरले को ही यह अवस्था प्राप्त होती है। गुरु जी ने तत्काल भाई घन्हईआ जी को गले से लगा लिया और प्रसन्नतापूर्वक वचन किया— ''भाई घन्हईआ जी, तुम धन्य हो! धन्य है तुम्हारी कमाई!! आज से एक सेवा और भी करना! घायल सैनिकों के जख़्मों पर मरहम भी लगाया करो!''

तुठ्ठे ते गल लाया पिआरा,
डब्बी हत्थ फड़ाई।
पानी नाल मरहम वी रखीं,
लोड़ पई तां लाईं!

प्रेमपूर्वक गले से लगा कर हाथ में मरहम की डिब्बी पकड़ाते बुए बोले, ''आज से पानी पिलाने की सेवा के साथ-साथ अगर जरूरत पड़े तो घायल सैनिक के जख्मों पर मरहम-पट्टी भी कर देना!'' धन्य हैं गुरु! और धन्य हैं गुरु के सिक्ख!

७० वर्ष इस मातलोक में पल-पल सेवा और सिमरन में व्यतीत करने वाले भाई घन्हईआ जी की नि:स्वार्थ सेवा-भावना वाले पद-चिन्हों वाली छाप पाकर विश्व में 'रेडक्रॉस' संस्था की शुरूआत हुई मानी जाती है।

खटकड़ कलां के देश-भक्त परिवार का वारिस : शहीद स. भगत सिंह

*-सिमरजीत सिंह**

ज़िला नवांशहर का प्रसिद्ध गांव खटकड़ कलां, बंगा—नवांशहर सड़क पर स्थित पंजाब और अब समूचे देश का भी एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक गांव है। इस गांव को अपने निवासी स्वतंत्रता-संग्रामी के परिवार पर नाज़ है। गांव खटकड़ कलां के स्थान पर पहले एक किला हुआ करता था, जिसका सम्बंध एक जागीर के मुखिया से था। इसके साथ कई और भी किले थे, किंतु वे इससे छोटे थे, जिसके कारण उनको 'गढ़ खुर्द' कहा जाता था तथा इसको 'गढ़ कलां' या 'बड़ा गढ़' कहा जाता था।

सरदार भगत सिंह के पूर्वज़ मुगल काल के दौरान लाहौर जिले के नारली गांव में रहते थे। नारली गांव आजकल पाकिस्तान की सरहद पर स्थित है। इस गांव में शहीद भगत सिंह बहुत बार जाते रहे और डॉ. शविंदर सिंघ (संधू) की पुश्तैनी हवेली में ठहरते रहे। संधुओं का बहादुर राजा चर्मिक यहां का निवासी था, जिसने पोरस से भी पहले यूनानी हमलावरों को मार भगाया था। इस घराने में से करोड़सिंघिआ मिसल के मुखिया सरदार शाम सिंघ तथा सरदार बघेल सिंघ ने लाल किले पर खालसाई निशान साहिब झुलाया था। सरदार भीला सिंघ ने स्वतंत्रता-संग्रामी नामधारी सिंघों की रक्षा हेतु शहादत प्राप्त की। एक बार उनके परिवार का एक नौजवान श्री रणीआ (सरदार भगत सिंघ से नौ पीढ़ी पहले) अपने बुज़ुर्गों की अस्थियां, जो किसी दुखद घटना में मारे गए थे, गंगा में जल-प्रवाह करने के लिए गांव से पैदल ही जा रहा था। रास्ते में बड़े गढ़ के पास उसे रात हो गयी, तो वह बड़े गढ़ के मालिक से रात ठहरने की आज्ञा लेकर वहीं ठहर गया। रात के खाने के समय गढ़ के मालिक ने उससे उसकी यात्रा का लक्ष्य तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि और मौजूदा परिवार के बारे में जानकारी प्राप्त करने के उपरांत अपनी पत्नी से सलाह कर उसको अपनी पुत्री के लिए वर के रूप में चुनने की चाहत पेश की, जिसके लिए नौजवान ने सहमति दी और अपनी अगली मंज़िल की तरफ चल पड़ा।

वापिस आने पर १७२५ ई. के लगभग उन दोनों का विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। गढ़ के मालिक एवं मालकिन ने 'बड़ा गढ़' इस दम्पति को रहने के लिए दहेज में दे दिया। विवाह के उपरांत इस स्थान का नाम 'खट' में मिले हुए 'गढ़' के कारण 'खटगढ़ कलां' पड़ गया, जो बाद में बदलता-बदलता 'खटकड़ कलां' बन गया। इस घटना को बयान करती काव्य पुस्तक प्रो. दीदार सिंघ ने १९८४ ई. में प्रकाशित करवायी, जिसमें ज़िक्र है :

रावी नेड़े नगर नारली, संधू जट्टां दा।
जित्थे घुग्ग वसदे सन लोकीं,

*मुख्य संपादक। फोन : ९८१४८-९८२२३

झुरमट हट्टां दा।
पिंड विच झगड़ा मूल ना कोई,
बन्निआं वट्टां दा।
चरमिक संधू कुल दा राजा,
रसीआं भट्टां दा।
रहे सिरलथ सूरे जूझदे,
धंन धंन करे जहान।
छड्ड नारली चरमिक नींगर,
पुज्जा खट गढ़ आण।
गढ़ी दे राजे आपणी बेटी,
सुंदर चतर सुजान।
गढ़ी ते सारा राज-भाग वी,
खट्ट विच कीता दान।
उस दिन तों इह थां अखवाई,
'खट्ट-गढ़' बंगे कोल।

इस दम्पति से खटकड़ कलां में महान स्वाधीनता संग्रामियों तथा शहीदों के परिवार का आगाज़ हुआ। समय बदलने के साथ-साथ इस गढ़ की दीवारें ढह-ढेरी हो गयीं। गढ़ की सुरक्षा के लिए बनायी गयी गहरी खाई गांव में चार पोखरों का रूप धारण कर गयी। आज भी कई बार जब ज्यादा बारिश हो जाती है तो ये दो या तीन पोखर आपस में मिल जाते हैं।

आगे चलकर इस परिवार के सदस्य सिक्ख धर्म से प्रभावित होकर सिक्ख धर्म धारण कर गए तथा 'खालसा सरदार' नाम से पुकारे जाने लगे। इस परिवार की तीसरी पीढ़ी में स. राम सिंघ थे। इन्होंने सिक्ख राज्य की स्थापना के लिए महाराजा रणजीत सिंघ की मदद अपनी जान की परवाह न करते हुए की। सिक्ख राज्य की स्थापना के लिए इनके द्वारा दिखलाई हिम्मत व वफ़ादारी के कारण इस परिवार को इनाम के रूप में एक बड़ी जागीर दी गयी तथा यह परिवार बड़े-बड़े जागीरदार घरानों में गिना जाने लगा। महाराजा रणजीत सिंघ के समय तक यह परिवार जागीरदारों के रूप में दरबार लगाता रहा तथा इलाके के लोगों का इंसाफ करता रहा। इस परिवार के पास अपनी निश्चित फौज रखने के अधिकार थे, जो जरूरत पड़ने पर महाराजा को भेजी जाती थी। इस परिवार के पास सिक्ख राज्य का कौमी झंडा चढ़ाने का अधिकार भी था। परिवार के सदस्यों द्वारा सिक्ख राज्य का कौमी झंडा वर्ष में चार बार बड़े उत्साह से चढ़ाने की रस्म अदा की जाती थी। जिस स्थान पर यह झंडा चढ़ाया जाता था, उस जगह का नाम 'झंडा जी' पड़ गया और इस स्थान पर आजकल गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। स. राम सिंघ के घर १८२० ई. में स. फतहि सिंघ ने जन्म लिया।

महाराजा रणजीत सिंघ की मृत्यु के उपरांत पंजाब पर अंग्रेजों ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया और लोगों के अधिकारों को कुचलना शुरू कर दिया। पंजाब के बहादुर लोगों ने अंग्रेज हमलावरों को अपने देश में से निकालने के लिए हथियार उठा लिए तथा अंग्रेज हाकिमों के विरुद्ध लड़ने-मरने वाली फौज में शामिल हो गए। स. फतहि सिंघ ने मुद्दकी, सभराउं, आलीवाल की लड़ाई में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के कारण इस परिवार की जागीर कम कर दी गयी।

जब १८५७ ई. की आज़ादी की लड़ाई में

कुछ जागीरदार तथा राजा, अंग्रेजों द्वारा दिखलाये सब्जबाग के प्रभाव तले अंग्रेजों के हक में अपने ही देश-भक्त भाइयों के विरुद्ध लड़े तो उस वक्त भी उनके साथ अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने धोखा देकर अभद्र व्यवहार किया। स. फ़तहि सिंघ को भी उनकी छीनी हुई जागीर वापिस देने का लालच देकर यह काम करने के लिए ज़ोर डाला गया, जिसके लिए उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा कि वे अपने देश के हितों को मुख्य रखते हुए अपना सब कुछ गंवाना उचित समझते हैं, किंतु वे अपने देश के लोगों के विरुद्ध हथियार नहीं उठा सकते।

स. फ़तहि सिंघ का पुत्र था— जैलदार गुरबचन सिंघ। (कई स्रोतों में खेम सिंघ नाम लिखा मिलता है।) इसके तीन पुत्र थे— स. अरजन सिंघ, स. सुरजन सिंघ तथा स. मेहर सिंघ। स. अरजन सिंघ एक जाने-माने जमींदार थे, जो स्वाधीनता की लड़ाई में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहे। इनकी नेकदिली के कारण ये पूरे इलाके में सम्मान के हकदार थे। इन्होंने इलाके में कुएं लगवाए, सराय बनवायी, गुरुद्वारा साहिबान बनवाए। स. अरजन सिंघ के लिए धर्म रूह की खुराक थी, दिखावा नहीं था। ये किरत करके, धर्म के लिए अपने हाथों दान देकर सरबत्त का भला मांगने में विश्वास रखते थे। हिंदोस्तान में कोई भी ऐसी जगह नहीं थी जिसके बारे में आपको मालूम पड़ता कि वहां अकाल पड़ा है, भूकंप आया है, बाढ़ आई है या किसी अन्य कारण की वजह से जनता दुखी है, आपने ऐसी हर जगह पर सहायता पहुंचाने का प्रयास किया।

एक बार की बात है। गांव का एक दर्जी चीन देश में रोज़गार की तलाश में गया और जब वापिस आया तो उसको छूत के रोग प्लेग ने दबोच लिया। दिनों में ही यह बीमारी गांव में फैलने लगी। अंग्रेज कलेक्टर ने हुक्म दिया कि जिन घरों में प्लेग फैली हुई है, वे नष्ट कर दिए जाएं। स. अरजन सिंघ ने इस बात का डटकर विरोध किया और कहा कि सरकार घर को गिराने से पहले उनको दोबारा बनाना यकीनी बनाए।

जब अंग्रेज सरकार ने बार के जंगली इलाके को आबाद करने के लिए २५-२५ एकड़ ज़मीन देकर किसानों को बसाने का प्रयत्न किया, उस समय स. अरजन सिंघ को लायलपुर के पास बंगा गांव में २५ एकड़ ज़मीन अलाट हो गयी और वे वहीं जा बसे।

स. अरजन सिंघ के घर बीबी जै कौर की कोख से तीन पुत्रों— स. किशन सिंघ, स. अजीत सिंघ तथा स. सवरन सिंघ ने जन्म लिया। इन तीनों भाइयों ने पंजाब में 'अंजुमन मुहिब्बाने वतन' (भारत माता सोसायटी) के लिए बहुत काम किया।

स. किशन सिंघ का जन्म १८७६ ई. में ज़िला जलंधर के गांव खटकड़ कलां में हुआ। स. किशन सिंघ के मन में समाज-सेवा की बहुत भावना थी। १८९८ ई. में पड़े अकाल के समय तथा १९०४ ई. में कांगड़ा में आये भूकंप के समय इन्होंने जरूरतमंदों की बहुत सहायता की। १९०६ ई. में आप राजनीति में सरगर्म हुए। १९०७ ई. में आपने 'कैनाल एक्ट' का डटकर विरोध किया। उस समय अंग्रेज सरकार ने आपको गिरफ्तार कर

लिया तथा आपको दो वर्ष की कैद काटनी पड़ी। जेल में रहते समय आपको कैदियों के प्रति सरकार के व्यवहार का पता चला, जिसमें सुधार लाने हेतु आपने बहुत प्रयत्न किए। स. किशन सिंघ ने जेल में टोपी पहनने से इन्कार कर दिया तथा पगड़ी की मांग की। आपने भारी जद्दोजहद के बाद सिक्ख कैदियों के लिए ढाई गज़ पगड़ी की मांग आखिर मनवा ली। सन् १९३० ई. के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण आपको सरकार के जुल्म को सहना पड़ा। आप १९३८ ई. में पंजाब लेजिस्लेटिव असेंबली के सदस्य चुने गए।

स. किशन सिंघ के घर छः पुत्रों— स. जगत सिंघ, स. भगत सिंघ, स. कुलबीर सिंघ, स. कुलतार सिंघ, स. रजिंदर सिंघ, स. रणवीर सिंघ तथा तीन पुत्रियों— बीबा अमर कौर, बीबा समित्रा प्रकाश कौर तथा बीबा शकुंतला ने जन्म लिया। स. जगत सिंघ की ११ वर्ष की आयु में ही मृत्यु हो गई थी।

स. अरजन सिंघ के घर २३ फरवरी, १८८१ ई. को स. अजीत सिंघ का जन्म हुआ। स. अजीत सिंघ ने साँई दास एंग्लो संस्कृत स्कूल, जलंधर से विद्या प्राप्त की।

स. अजीत सिंघ जब छोटा था तब से ही अपने दादा जी से देश में घटित हुई घटनाओं के बारे में सुनता था। ये घटनायें सुनकर उसके अंदर अंग्रेजों के विरुद्ध नफरत पैदा होती गयी। स. अजीत सिंघ अपने घर आए तहसीलदार तथा थानेदार को देखता तो वे सभी पंजाबी होते थे। उसको कभी भी अपने दादा के पास कोई अंग्रेज आफिसर या कोई अन्य अंग्रेज देखने को नहीं मिला था। एक बार स. अजीत सिंघ ने अपने चाचा स. सुरजन सिंघ को अंग्रेज आफिसर के साथ देखा। अंग्रेज आफिसर स. सुरजन सिंघ से उम्र में छोटा था, किंतु फिर भी स. सुरजन सिंघ ने उसे झुककर सलाम की। अंग्रेज आफिसर को पंजाबी भी अच्छे-से नहीं बोलनी आती थी। उसकी टूटी-फूटी पंजाबी सुनकर स. अजीत सिंघ की अक्सर हंसी निकल जाया करती थी। अंग्रेज उससे इस बात से भी नाराज़ रहते थे कि वो उनको सैल्यूट नहीं करता था।

स. अजीत सिंघ अभी बच्चा ही था कि अपने बड़े भाई स. किशन सिंघ के साथ होला-महल्ले वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब जाकर दोनों अमृत छककर तैयार-बर-तैयार सिंघ सज गए। आपका विवाह श्री धनपत राय की दत्तक पुत्री बीबी हरनाम कौर के साथ हुआ। विवाह के बाद स. अजीत सिंघ ने बीबी हरनाम कौर को गुरबाणी का एक गुटका दिया, जिससे वो हर दिन सोने से पूर्व पाठ करती थी। यह गुटका उसने सारी उम्र अपने पास संभालकर रखा।

आपने लॉ कॉलेज, बरेली से पढ़ाई शुरू की, किंतु स्वास्थ्य ठीक न होने पर आपको पढ़ाई छोड़कर वापिस आना पड़ा। फिर आपने डी. ए. वी. कॉलेज, लाहौर से एफ. ए. पास कर ली। आपने यूरोपी लोगों को पंजाबी पढ़ाना शुरू कर दिया। १९०७ ई. में ज़मीनी मामले तथा नहरी पानी की दरों में बढ़ोतरी हो जाने के कारण आंदोलन शुरू हो गया। आपने शाहूकारों एवं जागीरदारों द्वारा की जाती लूट-खसूट का विरोध

किया। किसानों को जत्थेबंद कर के 'पगड़ी संभाल जट्टा' लहर चलाई तथा किसान नेता के रूप में उभर कर सामने आए। आपने 'पेशवा' नामक अख़बार लाहौर से शुरू किया तथा बहुत सारी किताबें एवं ट्रेक्ट छापकर लोगों को जागृत करने के लिए बांटे, जिनमें से १८५७ ई. का गदर, उंगली पकड़े पंजा पकड़ा, बागी मसीह, महबूब-ए-वतन, बंदर बाद, देसी फौज आदि प्रसिद्ध हैं। इनके द्वारा लिखित बहुत-से ट्रेक्ट सरकार द्वारा बगावती सुर वाले समझकर ज़ब्त किए जाते रहे।

स. अजीत सिंघ ने लाहौर में 'महबूब-ए-वतन' नामक एक संघ स्थापित किया। यहां काम करते हुए उनके ही एक साथी ने उनको पकड़वा दिया, जब वे हलवाई के भेस में कोलकाता की तरफ जा रहे थे। उनको लाला लाजपत राय के साथ ही मांडला जेल में कैद कर दिया गया। १९०७ ई. में उनको रिहा कर दिया गया। वे रूपोश होकर आज़ादी की लड़ाई में भाग लेते रहे।

आपने अपने भाई स. किशन सिंघ के साथ मिलकर लाला लाजपत राय से विशेष सम्बंध स्थापित किए। आपके भाषण में बहुत दलील थी, जिसके कारण श्रोतागण आपके कायल हो जाते थे।

१९०५ ई. में बंगाल-विभाजन के खिलाफ सारे देश में रोष प्रकट किया जा रहा था। पंजाब के लोगों में इस विभाजन के कारण बहुत आक्रोश था। पंजाब में अंग्रेजों ने नये आबादकारों पर कालोनाइजेशन एक्ट लागू कर दिया था। स. किशन सिंघ, स. अजीत सिंघ तथा स. सवरन सिंघ, सूफी अंबा प्रसाद सहित इस एक्ट का डटकर विरोध कर रहे थे। हज़ारों ही किसान इस आंदोलन में हिस्सा ले रहे थे। सूफी अंबा प्रसाद की अगुआई में 'पेशवा' अख़बार तथा किताबचे छापकर बांटे गए। आंदोलन से डरते हुए अंग्रेजों ने इन प्रमुख नेताओं को पकड़ कर जेलों में बंद कर दिया। १९०४-०५ ई. में राजपूताने के इलाके में अकाल पड़ गया। इतनी बुरी हालत हुई कि चारों ओर हाहाकार मच गयी। स. किशन सिंघ ने इस भयंकर स्थिति में लोगों के लिए अनाज, रोटी, कपड़े का प्रबंध किया तथा जिन बच्चों के मां-बाप मर गए थे, उनके लिए एक यतीमखाने का भी प्रबंध किया, जिसकी देखभाल वे खुद करते रहे।

स. सवरन सिंघ भी अपने बड़े भाई स. अजीत सिंघ की तरह 'पगड़ी संभाल जट्टा' ऐज़िटेशन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहे तथा बहुत सारे अख़बारों एवं किताबचों में अंग्रेज सरकार की काली करतूतों को लोगों के सामने लाते रहे। आपको भी अंग्रेजों ने जेल में बंद कर दिया तथा सख्त यातनायें दी गयीं। आपसे आंदोलन के भेद जानने के लिए आपको कोल्हू के आगे बैलों की जगह पर जोड़ा जाता रहा। १९०७ ई. में आपको भी अन्य कैदियों के साथ रिहा कर दिया गया, किंतु आप जेल में नामुराद क्षय रोग का शिकार हो गए।

शहीद स. भगत सिंघ का जन्म २८ सितंबर, १९०७ ई. को स. किशन सिंघ के घर माता विद्यावती की कोख से गांव बंगा चक्क १०५, ज़िला लायलपुर में हुआ। स. भगत सिंघ के जन्म के समय पूरे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गयी।

नये जन्मे बच्चे को भाग्यशाली समझा गया, क्योंकि इसी दिन इनके पिता लाहौर सेंट्रल जेल से ज़मानत पर रिहा हुए थे तथा इनके चाचा स. अजीत सिंघ का मांडला जेल (बर्मा) से रिहायी का हुक्म जारी हुआ था। छोटे चाचा स. सवरन सिंघ की भी इसी दिन जेल से रिहायी हुई थी। इन्हीं कारणों से नव-जन्मे बच्चे का नाम दादी ने 'भागां वाला' रख दिया तथा बाद में 'भगत सिंघ' कहा जाने लगा।

१९१० ई. में जब आपकी उम्र ३ वर्ष के लगभग थी, आप जी के चाचा स. सवरन सिंघ २२ वर्ष की आयु में जेल की यातनाओं से लगी बीमारी के कारण इस संसार को सदा के लिए अलविदा कह गए।

स. भगत सिंघ बचपन में अपने घर में विधवा जीवन व्यतीत कर रही अपनी बड़ी चाची बीबी हरनाम कौर तथा छोटी चाची बीबी हुकम कौर को देखते थे, जिससे उनके मन में बचपन से ही अंग्रेजों के प्रति घोर नफ़रत पैदा होनी शुरू हो गयी थी।

स. भगत सिंघ ने प्राथमिक शिक्षा बंगा, ज़िला लायलपुर से प्राप्त की। स. भगत सिंघ की आयु उस समय लगभग सात वर्ष की थी जब बजबजघाट पर जहाज से उतरते देश-भक्त गदरी बाबाओं को अंग्रेज सरकार ने गोलियों से भून डाला, कुछ को समुद्र में डुबो दिया और जो बच गए उनको जेल में बंद कर दिया। इनमें से बहुत कम थे, जो जिंदा बचे और पंजाब पहुंचकर इंकलाबी सरगर्मियों में जुट गए। इन दिनों स. करतार सिंघ सराभा तथा कई अन्य गदरियों को फांसी देकर शहीद कर दिया गया था। इन घटनाओं के बारे में वे अपने घर में होती विचार-चर्चा से परिचित होते रहते थे तथा अपने मन में उसका प्रभाव कबूलते रहते थे। स. करतार सिंघ सराभा की शहादत एवं लाहौर साजिश केस ने आपको बहुत प्रभावित किया। १९१६ ई. में आप डी. ए. वी. स्कूल लाहौर में दाखिल हो गए। यहां पढ़ते हुए आपका सम्बंध प्रसिद्ध देश-भक्तों के साथ जुड़ा। १९१७ ई. में रूस में इंकलाबियों ने वहां की राजाशाही, भूमिशाही आदि को गद्दी से उतार दिया तथा श्रमिकों का राज्य स्थापित कर दिया। इस क्रांति ने दुनिया भर में अपना असर छोड़ा, जिससे भारत में इंकलाबियों को भी बल मिला। स. भगत सिंघ का इससे हौसला बुलंद हुआ।

१३ अप्रैल, १९१९ ई. को जलियां वाला बाग, श्री अमृतसर का खूनी साका घटित हुआ, जिसमें अंग्रेज सरकार ने अनेक निहत्थे भारतीयों को तोपों, बंदूकों की गोलियों से भून डाला। इस समय स. भगत सिंघ की आयु १२ वर्ष थी। स. भगत सिंघ जब घटना के बाद जलियां वाला बाग को देखने के लिए गये तो इस घटना ने स. भगत सिंघ के मन में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष की भावना को और तेज कर दिया। उन्होंने अपने देशवासियों के हुए खून-खराबे का बदला लेने का प्रण लिया।

१७ जनवरी से १९ जनवरी, १९२१ ई. तक मलेरकोटला में नामधारी शहीदों की याद में जोड़-मेला मनाया गया। कुछ नामधारी सिंघों को अंग्रेज सरकार ने श्री अमृतसर, रायकोट तथा लुधियाना में फांसी दे दी थी। १८७२ ई. में

मलेरकोटला में ६६ नामधारी सिंघों को शहीद किया गया था। पंजाब में अंग्रेजों ने मुसलमानों एवं सिक्खों के बीच भेदभाव पैदा करने के लिए श्री अमृतसर में श्री दरबार साहिब, घंटा-घर वाली जगह पर तथा रायकोट में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब के पास मुसलमानों के बूचड़खाने खुलवा दिए, जहां गाय कत्ल की जाने लगीं। इसका बाबा राम सिंघ तथा नामधारी सिंघों ने डटकर विरोध किया और प्रतिक्रम में श्री अमृतसर तथा रायकोट के कई बूचड़ों को कत्ल कर गायों को आज़ाद कर दिया। इस दोष में यह उपरोक्त साका घटित हुआ, जिसका जोड़-मेला मनाया जा रहा था। इस जोड़-मेले में स. भगत सिंघ अपने पिता स. किशन सिंघ के साथ दोआबा क्षेत्र के मशहूर गांव मुट्ठला कलां में शामिल हुए, जहां महान नेताओं ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

१९२१ ई. में गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के महंत नारायण दास के गुंडों द्वारा अंग्रेज सरकार की शह पर निहत्थे सिंघों को बड़ी बेदर्दी से शहीद किया गया। जत्थे के अगुआ जत्थेदार लछमण सिंघ को जंड के साथ बांधकर, आग लगाकर शहीद कर दिया गया। इस घटना से चारों ओर हाहाकार मच गयी। इस साके के बाद स. भगत सिंघ गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के दर्शन करने के लिए गए तथा साके के तत्काल बाद का हाल अपनी आंखों से देखा। स. भगत सिंघ वहां से वापिस लौटते समय शहीदों का एक कैलंडर भी लेकर आए। इस घटना के रोष में ५ मार्च को एक बड़ी रोष रैली की गयी। स. भगत सिंघ ने काले रंग की दसतार सजाकर इसमें शिरकत की और भविष्य में भी काले रंग की दसतार सजाना शुरू कर दिया।

जब स. भगत सिंघ दसवीं कक्षा में पढ़ते थे तो उस समय देश में अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग लहर शुरू हो गयी। स. भगत सिंघ ने भी डी. ए. वी. स्कूल छोड़कर लाहौर के नये खुले नेशनल कॉलेज में दाखिला ले लिया तथा असहयोग लहर में हिस्सा लिया। नेशनल कॉलेज क्रांतिकारियों का गढ़ था। यहां स. भगत सिंघ का संपर्क सुखदेव, भगवती चरण वोहरा तथा रणबीर सिंघ से हुआ। स. भगत सिंघ एफ. ए. की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कानपुर चले गए, जहां आपका संपर्क बी. के. दत्त, चंद्र शेखर आज़ाद तथा राम प्रशाद बिस्मिल्ला जैसे देश-भक्तों के साथ हुआ। १९२४ ई. में आप वापिस लाहौर आ गए।

मार्च, १९२४ ई. में जैतो का मोर्चा शुरू हो गया। अंग्रेज सरकार ने एलान कर दिया कि कोई भी व्यक्ति जत्थे के सदस्यों को पानी तक न पिलाए। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए स. भगत सिंघ ने १३वें शहीदी जत्थे को अपने गांव में लंगर छकाया। जब अंग्रेज सरकार को पता चला तो उसने स. भगत सिंघ की गिरफ्तारी के वारंट जारी कर दिए। पिता जी ने आपको कानपुर भेज दिया। गणेश शंकर विद्यार्थी ने आपको अलीगढ़ जिले के गांव सादीपुर में नेशनल स्कूल का मुख्याध्यापक लगा दिया। १९२५ ई. तक स. भगत सिंघ का लाहौर से कानपुर आना-जाना होता रहा।

१९२५ ई. में आपने जोशीले नौजवानों को इकट्ठा कर 'नौजवान सभा भारत' की नींव रखी।

आपके बहुत सारे साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। साथियों की गिरफ्तारी के बाद पार्टी का सारा काम आपके कंधों पर आ गया। अक्तूबर, १९२५ ई. में लाहौर में दशहरे के अवसर पर एक बम धमाका हुआ, जिसमें शक के आधार पर स. भगत सिंघ को गिरफ्तार कर लिया गया तथा बाद में रिहा कर दिया गया। १९२८ ई. में इन्होंने अपनी पार्टी का नाम बदल कर 'रीपब्लिक पार्टी' रख लिया।

स. भगत सिंघ तथा उनके साथी फिरोज़पुर शहर में रहकर अपनी गतिविधियां चलाते रहे। स. भगत सिंघ तथा उनके साथी अपने गुप्तवास का समय फिरोज़पुर शहर के तूड़ी बाज़ार के एक चौबारे में गुजारते रहे। इस चौबारे के नीचे एक बंगाली डॉक्टर की दुकान थी। इस बाज़ार का नाम आज़ादी के बाद 'शहीद-ए-आजम भगत सिंघ' रखा गया है।

३० अक्तूबर, १९२८ ई. को साइमन कमीशन लाहौर आया, तो देशवासियों ने काली झंडियों से उसका विरोध किया। स. भगत सिंघ तथा उसके साथी भी इस जुलूस में शामिल थे। अंग्रेज सरकार की पुलिस ने इन पर लाठीचार्ज किया, जिससे बहुत सारे मुज़ाहराकारी जख्मी हो गए, जिनमें लाला लाजपत राय भी शामिल थे। उनको भी कुछ लाठियां लगीं। लाला लाजपत राय ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के साथ दिल्ली जाकर मीटिंग की, किंतु वहां से वे कुछ तकरार की वजह से वापिस आ गए और कुछ दिनों बाद १७ नवंबर, १९२८ ई. को परलोक गमन कर गए। लाला लाजपत राय की मृत्यु की खबर चारों तरफ फैल गयी। जब इस खबर का बंगाल के चितरंजन दास मुंशी की पत्नी बसंती देवी को पता चला तो उसने पंजाबियों को ताने भरा उलाहना देते हुए नारा मारा कि ''लगता है, बहादुर पंजाबियों का खून सफेद हो गया है। इतना बड़ा लीडर मारा गया, पंजाब ने कैसे बरदाश्त कर लिया?'' स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों ने निहत्थे भारतीयों पर अंग्रेजों के जुल्म होते देखकर तथा बसंती देवी की चुनौती को स्वीकार करते हुए अंग्रेजों से अपने देशवासियों पर होते अत्याचार का बदला लेने का प्रण कर लिया। लाठीचार्ज का हुक्म अंग्रेज आफिसर मि. सकॉट ने दिया था। १९ दिसंबर, १९२८ ई. को स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों ने मि. सकॉट के भ्रम में पुलिस आफिसर मि. सांड्रस की गोली मारकर हत्या कर दी। सांड्रस के कत्ल के बाद स. भगत सिंघ फिरोज़पुर शहर चले गए तथा तूड़ी बाज़ार वाले चौबारे में पहुंच गए। यहां उनके चौबारे के सामने गंजिया नामक नाई रहता था, जिसकी मदद से वे अपना भेस बदल कर साथियों सहित कोलकाता चले गये।

८ अप्रैल, १९२९ ई. को स. भगत सिंघ तथा श्री बी. के. दत्त ने ब्रिटिश हुकूमत के काले कानूनों के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए असेंबली हॉल में बम फेंका तथा अपनी मांगों के इश्तिहार बांटे। यहां से आपको गिरफ्तार कर आप पर मुकद्दमा चलाया गया। स. भगत सिंघ ने अपना केस खुद लड़ा और उनके भाषण आज़ादी की लड़ाई के महान दस्तावेज़ बन गए, जिससे लोगों में जोश की लहर फैल गयी।

जेल में स. भगत सिंघ की भेंट भाई साहिब

भाई रणधीर सिंघ के साथ हुई। इन दोनों इंकलाबियों की भेंट के बारे में प्रसिद्ध लेखक स. जसवंत सिंघ कंवल ने अपनी लिखित में बयान किया है कि ''जब दोनों शख्सियतों का जेल में मिलाप हुआ तो स. भगत सिंघ ने भाई साहिब के पांव छुए और भाई साहिब ने कहा, ''गुरु के सिक्खा! सिक्खी में पांव छूना मना है। फतहि बुला!'' उन्होंने स. भगत सिंघ को अपने आलिंगन में लेते हुए कहा, ''तुमने गुरु के बहादुर सिंघ-शूरवीरों वाला काम किया है। धन्य हो तुम और धन्य है तुम्हें जन्म देने वाली!'' स. भगत सिंघ ने इसके जवाब में कहा, ''हम आपके बच्चे हैं और आज़ादी की शमा के परवाने। आज़ादी का फूल प्राप्त करने के लिए कंटीली तार तोड़नी ही पड़ेगी।'' भाई साहिब ने नसीहत देते हुए कहा, ''जज़्बात कच्चा सोना होते हैं। इनको कुर्बानी ही शुद्ध सोना बनाती है।'' स. भगत सिंघ ने भाई साहिब के विचारों से प्रभावित होकर उनसे दिशा-निर्देश लेकर चलने का फैसला कर लिया। भाई साहिब ने उनसे कहा, ''अगर इरादा इतना दृढ़ है तो गुरु जरूर सहायी होगा और फ़तहि हासिल होगी! मगर इतने दृढ़ निश्चय वाला गुरु-मर्यादा से बेमुख क्यों है? क्या तुम्हारा गुरु साहिब पर विश्वास नहीं?'' स. भगत सिंघ ने कहा, ''मेरा गुरु साहिबान पर पूर्ण विश्वास है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो आज़ादी के लिए सरवंश कुर्बान कर दिया। वे देश-भक्तों के सिरताज हैं। कुर्बानी की ऐसी उदाहरण दुनिया की तवारीख में कहीं नहीं मिलती।'' स. भगत सिंघ ने दाढ़ी एवं केश रखने का वादा किया। भाई साहिब ने कहा कि ''यहां केवल दाढ़ी एवं केशों की ही बात नहीं, बात गुरु पर आस्था एवं विश्वास की है। आज़ादी का पतंगा तो बने ही हो गुरु की आस्था भी रख लो या भगौड़ा हो जाओ।'' स. भगत सिंघ ने भाई साहिब से कहा, ''गुरु से बेमुख होकर तो मैं मिट्टी ही हो जाऊंगा।'' भाई साहिब ने उन्हें प्यार से परिरंभण में ले लिया और दोनों महान शख्सियतें एक हो गयीं।''

यहां यह बात वर्णनयोग्य है कि विभिन्न विद्वानों के स. भगत सिंघ के नास्तिक होने के बारे में विचार भी विभिन्न हैं। जब उनके दोस्त उनसे बार-बार उनके नास्तिक होने का कारण पूछते हैं तो स. भगत सिंघ इसके बारे में तर्कसंगत जवाब देते हैं कि वे नास्तिक नहीं हैं। वे परमात्मा के नाम पर किए जाते अंधविश्वासों को नहीं मानते, किंतु उनका ईश्वर के अस्तित्व में पूर्ण विश्वास है। उन्होंने अंग्रेजी में अपना लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूं?' लिखा, जो अंग्रेजी अखबार 'दी पीपल' में लाहौर से प्रकाशित हुआ था और जिसका अनुवाद बाद में हर भाषा में हुआ है। उसमें स. भगत सिंघ बताते हैं कि ''धर्म अपने देश हेतु शहीद होने के लिए आसान बना देता है तथा अंधविश्वास मानव की कमज़ोरी का प्रमाण बन जाता है, जो बहुत खतरनाक होता है। इस कारण मैं ईश्वर को तो मानता हूं, मगर अंधविश्वास के विरुद्ध हूं।''

अदालत में बम फेंकने के केस में स. भगत सिंघ तथा श्री बी. के. दत्त को कालापानी की सज़ा सुनाई गयी। इसी समय स. भगत सिंघ, राजगुरु एवं सुखदेव पर सांड्रस की हत्या का मुकद्दमा चल रहा था, जिसमें इन तीनों को फांसी की सज़ा

सुनायी गयी। उन दिनों कनाडा से प्रकाशित होते एक साप्ताहिक पंजाबी अख़बार ने स. भगत सिंघ तथा उनके साथी राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी की सज़ा दिए जाने के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की। ३० अक्तूबर, १९३० ई. के अंक में अख़बार के मुख्य पृष्ठ पर 'बीर (वीर) भगत सिंघ दी अपील : प्रिवी कौंसिल लंदन विच फांसी दे फैसले दे खिलाफ आखिरी यत्न, डीफेंस लाहौर दी मदद लई मंग' शीर्षक तले खबर छापकर पंजाबियों से सहायता की मांग की गई थी। इस खबर में स. भगत सिंघ की पोस्ट कार्ड साइज़ फोटो छापकर उस पर फांसी लिखा गया था। अख़बार के संपादक द्वारा इस अंक की संपादकीय भी इसी विषय पर लिखते हुए लोगों की इन शूरवीरों के प्रति सच्ची भावनाओं को उजागर किया गया था। इसमें संपादक ने जिक्र किया था कि ''शायद ही कोई ऐसा भारतीय होगा, जिसकी रगों में खून खौलता नहीं होगा। जिसने भी इन योद्धाओं की फांसी की यह खबर सुनी है उसका हृदय चूर-चूर हुआ है।''

देश की आज़ादी के लिए कुर्बान होने वाले इन शूरवीर योद्धाओं की सहायता के लिए आर्थिक सहायता की मांग भी इसी अंक में की गयी थी, जिसके बारे में लाहौर के एक अंग्रेजी अखबार 'पीपल वीकली' को भेजने के बारे में लिखा गया था। लोगों ने इनकी सहायता के लिए हज़ारों रुपये इस अख़बार को भेजे, जिनके नाम तथा गांव इस अख़बार के १३ नवंबर, १९३० ई. वाले अंक में प्रकाशित किए गए। गांव संधम, बड़ा पिंड, मैहदपुर, भंगल, जंडियाला, संकत, खोसे, अधकारे काठे, पंडोरी निज्झरां, झिंगड़, रुटैंडा, कंदोला, पुरहीरां, जंडियाली, कोटला आदि अनेक गांव के व्यक्तियों द्वारा भेजी गयी सहायता की सूची प्रकाशित की गयी, जिसमें इन लोगों द्वारा विनती की गयी थी कि इन नौजवानों को फांसी से बचाने के लिए हर संभव प्रयास किया जाए। कनाडियन कांग्रेस कमेटी के सदस्य द्वारा स. भगत सिंघ को बचाने के लिए उगाही की गयी, जिसको लोगों ने भरपूर सहयोग दिया। इसे अख़बार में मुख्य खबर बनाकर प्रकाशित किया गया। इसी अख़बार में लाहौर में चलते मुकद्दमे के बारे में 'पूरा फैसला' शीर्षक के अधीन सारा हाल बयान किया गया, जिसमें छोटे शीर्षक बनाकर फांसी, कालापानी, सख्त कैद तथा छोड़े गए व्यक्तियों के नाम भी प्रकाशित किए गए। चाहे इन अखबारों ने फांसी के इन हुक्मों के बारे में ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की थी, लेकिन फिर भी अंग्रेज सरकार ने सभी कानूनों को ताक पर रखकर ज़ालिमाना ढंग से इन देश-प्रेमियों को २३ मार्च, १९३१ ई. को फांसी पर लटकाकर ही दम लिया।

उन दिनों फांसी देने का आम नियम यह था कि जिस दिन फांसी देने की तारीख नियत की जाती थी, उस दिन से तीन दिन पहले रिश्तेदारों, मित्रों को मुलाकात करने की आज्ञा होती थी। जब स. भगत सिंघ के पिता स. किशन सिंघ तथा अन्य सगे-सम्बंधी-दोस्त मुलाकात करने के लिए गए तो जेल के दारोगा ने कहा कि केवल सगे-सम्बंधी ही मुलाकात कर सकते हैं, अन्य नहीं। स. किशन सिंघ ने कहा कि दोस्तों-मित्रों को भी आज्ञा होनी चाहिए, नहीं तो वे भी मुलाकात नहीं करेंगे।

दोस्तों को मिलने की आज्ञा न दी गयी तो स. किशन सिंघ ने भी मुलाकात न की। स. भगत सिंघ की मां ने उन्हें दुलारते हुए कहा कि ''एक दिन तो सभी ने मरना है, लेकिन शानदार मौत वो होती है जिस पर दुनिया गर्व करे।'' उसने स. भगत सिंघ को फांसी चढ़ने से पहले 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाने के लिए भी कहा।

जिस दिन किसी को फांसी देना होता था तो एक दिन पहले मुलाकात करने के लिए आए उसके वारिसों को लाश ले जाने के लिए कह दिया जाता था कि अगर वे चाहते हैं तो लाश ले जा सकते हैं। फांसी वाले दिन कैदी को सुबह स्नान करवाया जाता था। उसके बाद सूर्योदय होते ही (ग्रीष्म ऋतु में) साढ़े सात-आठ बजे फांसी लगा दी जाती थी। मजिस्ट्रेट आकर फांसी लगाता था। फांसी देने के बाद लगभग एक घंटे तक लाश लटकती रहती थी। जेल का डॉक्टर आकर मुआइना करके लाश उतारता था, जो जेल के बाहर ले जाकर वारिसों को सौंप दी जाती थी। स. भगत सिंघ व उनके साथियों को फांसी देते समय किसी भी कायदे-कानून का ख्याल नहीं रखा गया। फांसी की निश्चित तारीख से एक दिन पूर्व जेल से सभी कैदियों को शाम चार बजे की जगह तीन बजे ही काम से छुट्टी करके बंद कर दिया गया। जेल का एक अहाता, जिसे हवालात कहा जाता था, उसमें से कैदियों को बाहर निकालकर खाली कर लिया गया। वहां लकड़ियां, मिट्टी के तेल के पीपे आदि लाकर जमा कर लिए गए। शायद पहले स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों का यहीं पर अंतिम संस्कार करने की योजना बनाई गयी थी। साढ़े छः बजे के लगभग स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों को पुलिस की गार्द ने फांसी वाली वर्दियां पहनायीं। स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों ने टोपियां पहनने से इन्कार कर दिया। वे कोठरियों में से नारे लगाते हुए निकले, जिससे आसमान गूंज उठा। पुलिस वालों ने स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों के मुंह बांध दिए, ताकि वे नारे न लगा सकें। स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों को फांसी के लिए कोठरियों के पीछे से अंदर ले जाया गया। फांसी देने से पहले उनके मुंह खोल दिए गए। फांसी के तख्ते पर उन्होंने तीन नारे लगाए और ''खुश रहो अहिल-ए-वतन, हम तो सफर करते हैं'' कविता पढ़ी। जल्लाद ने फांसी का तख्ता खींच दिया। यह सारा काम शाम सात बजे के लगभग खत्म हो गया। आम तौर पर फांसी देने के एक घंटा बाद तक लटकाये रखा जाता है, किंतु स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों के साथ ऐसा नहीं हुआ। स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों को फांसी देने वाले जल्लाद ने फांसी के नीचे बनी खाई में उतरकर उनकी टांगों के साथ लटककर उनकी घंडियां (गर्दन का एक अंग, जिसके टूटने से इंसान की मृत्यु हो जाती है) तोड़ दीं। १०-१५ मिनट बाद तड़पती हुई लाशों को उतारकर, जेल की पिछली दीवार तोड़कर बाहर खड़ी गाड़ियों में रख दिया गया। गाड़ियों में हथियारबंद अंग्रेज गार्द तैनात थी। अंग्रेजों को स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों पर भारी गुस्सा था, क्योंकि उन्होंने एक अंग्रेज का कत्ल किया था। वे गुस्से से पागल हुए लाशों को गाड़ी में ही काटते रहे तथा सतलुज

दरिया के गंडा सिंघ वाले पुल के पास जाकर फर्जी तौर पर आग लगाने का ड्रामा कर लाशों को दरिया में बहा दिया।

यह सारी घटना २३ मार्च, १९३१ ई. को सेंट्रल जेल लाहौर में घटित हुई। इस बाबत पता चलने पर लोगों में हाहाकार मच गयी। जगह-जगह पर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध जलसे-जुलूस होने लगे। उस दिन फिरोज़पुर शहर के गोखला हाल में भी लोगों द्वारा एक जलसा किया गया। हज़ारों लोग टोलियां बनाकर शहीदों के दाह-संस्कार वाली जगह को ढूंढने लगे। कहा जाता है कि फिरोज़पुर शहर के एक व्यक्ति रामजी दास ढिंडोरे वाला के पैरों को गर्म धरती महसूस हुई, जिससे शहीदों की लाशों के हुए अपमान का अंदाज़ा लगाया गया। शहीद स. भगत सिंघ के फांसी लगने के बाद अख़बारों ने यह बात जाहिर की कि उनका निश्चय सिक्ख धर्म में पक्का था। कसूर के ग्रंथी भाई नत्था सिंघ ने अख़बारों को बताया कि अंतिम संस्कार के वक्त शहीद स. भगत सिंघ के सिर पर छः-छः इंच लंबे केश थे तथा सरकार का भी एलान था कि मृतक का दाह-संस्कार सिक्ख रिवायतों के अनुसार करवाया जाए। मुम्बई के 'बलिट्ज़' अख़बार के २६ मार्च, १९४९ ई. के अंक में शहीद स. भगत सिंघ की सिक्खी स्वरूप वाली फोटो छापी गयी। यह फोटो स. भगत सिंघ के फांसी लगने से कुछ मिनट पहले दिल्ली के व्यक्ति शाम लाल द्वारा खींची गयी बतायी जाती है।

२३ मार्च, १९३२ ई. को शहीद स. भगत सिंघ तथा उनके साथियों का पहला शहीदी दिवस मनाया गया। उस समय लोक-कवि 'तायर' ने तांगे पर खड़े होकर स. भगत सिंघ की घोड़ी (लोक-गीत) पढ़ी :

आवो नी भैणों रल गावीए घोड़ीआं,
जंञ ते होई तिआर वे हां।
मौत कुड़ी नूं परनावण चल्लिआ,
देश भगत सरदार वे हां।
फांसी दे तखते वाला ख़ारा बणा के,
बैठा तूं चौकड़ी मार वे हां।
हंझूआं दे पाणी भर नहावो गड़ोली,
लहू दी रत्ती मोहल्ही धार वे हां।
फांसी दी टोपी वाला मुकट बणा के,
सिहरा तूं बद्धा झालरदार वे हां।
जंडी तड्डी लाड़े ज़ोर-जुल्म दी,
सबर दी मार तलवार वे हां।
राजगुरू ते सुखदेव सरबाल्हे,
चढ़िआ ते तूं ही विचकार वे हां।
वाग-फड़ाई तैथों भैणां ने लैणी,
भैणां दा रक्खिआ उधार वे हां।
हरी किशन तेरा बणिआ वे सांढू,
ढुक्के ते तुसीं इको वार वे हां।
पैंती करोड़ तेरे जांञी वे लाड़िआ,
कई पैदल ते कई सवार वे हां।
कालीआं पुशाकां पा के जंञ जु तुर पई,
'तायर' वी होइआ तैयार वे हां।

१५ अगस्त, १९४७ ई. को भारत आज़ाद हुआ। उसी दिन स. अजीत सिंघ की डलहौजी के निकट पंचपुला में हुई मृत्यु की खबर आ गयी। यहां पर इनकी याद में एक स्मारक भी बना हुआ है। जब सारा भारत आज़ादी का जश्न मना रहा

था, उसी समय पंजाब सांप्रदायिकता तथा दंगों का अजीब तरह का संताप भोग रहा था। पाकिस्तान अस्तित्व में आ चुका था। इस विभाजन के समय देश के महान शहीदों का सतलुज के किनारे 'हुसैनी वाला' नामक स्थान पाकिस्तान में चला गया, जिसे १७ जनवरी, १९६१ ई. को स. प्रताप सिंघ कैरों, मुख्यमंत्री पंजाब की कोशिशों का सदका पाकिस्तान से खरीदकर भारत में शामिल किया गया तथा शहीदों की यादगार स्थापित की गयी। फिरोज़पुर में शहीदों के दाह-संस्कार वाले स्थान पर उनकी समाधियां बनाई गयीं तथा कांसी की प्रतिमाएं स्थापित की गईं।

आज़ादी के बाद स. भगत सिंघ के भाई स. कुलबीर सिंघ खटकड़ कलां से फिरोज़पुर चले गए तथा मोती बाज़ार में रहने लगे। १९६२ ई. में उन्होंने जनसंघ पार्टी द्वारा चुनाव में हिस्सा लिया तथा अपने विरोधी को भारी बहुमत से हराकर फिरोजपुर से विधायक का चुनाव जीता।

२३ मार्च, १९६३ ई. को स. भगत सिंघ की प्रतिमा खटकड़ कलां में स्थापित की गई। प्रतिमा पर पहली माला उनकी माता विद्यावती ने पहनायी। इस खबर का प्रसारण सभी टेलीविज़नों पर दिखाया गया, जिसे देखकर उनका साथी ज़िंदा शहीद श्री बी. के. दत्त उनकी मां से मिलने के लिए आया। इस मुलाकात के सात दिन बाद श्री दत्त बीमार पड़ गया और कुछ समय बाद ही सदा की नींद सो गया। श्री बी. के. दत्त की वसीयत के मुताबिक उसका अंतिम संस्कार भी यहीं पर कर, उसकी भी समाधि बनायी गयी।

उसी वर्ष स. अजीत सिंघ की पत्नी माता हरनाम कौर की मृत्यु हो गयी। उनका दाह-संस्कार भी उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार शहीद स. भगत सिंघ की समाधि के पास ही किया गया।

१९७१ ई. में भारत-पाकिस्तान की जंग के समय पाकिस्तानी फौज ने भारत के इलाके पर इन समाधियों तक कब्जा कर लिया। भारतीय फौज के योद्धाओं ने अपनी जान पर खेलकर इन यादगारों को दोबारा अपने कब्जे में ले लिया, परंतु पाकिस्तानी फौज ने इन देश-भक्तों की कांसी की प्रतिमाओं को तोड़कर नष्ट कर दिया। भारत सरकार द्वारा काफी देर बाद इन यादगारों को दोबारा स्थापित किया गया।

स. भगत सिंघ की माता को १ जनवरी, १९७३ ई. को पंजाब सरकार द्वारा 'पंजाब माता' का खिताब तथा १००० रुपये प्रति महीना पेन्शन देकर इन्हें 'शहीद की माता' होने का सम्मान दिया गया। इनके निधन के बाद इनका दाह- संस्कार भी शहीदों की समाधियों के पास ही फिरोज़पुर में करके इनकी समाधि स्थापित की गयी।

स्रोत-पुस्तकें :—

१. सिक्ख पंथ विश्व कोश, डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)
२ पंजाब कोश, भाषा विभाग पंजाब
३. जन साहित, सितंबर २००७, भाषा विभाग पंजाब
४. जेल चिट्ठीआं, भाई रणधीर सिंघ
५. जेल डायरी स. भगत सिंघ, पंजाब सरकार
६. साडा नवांशहर, जे. बी. गोयल, आई. ए. एस
७. पिंड, शहर ते कसबे, स. अमरजीत सिंघ
८. युग पुरुष स. भगत सिंघ अते उन्हां दे बुजुर्ग, वरिंदर संधू
९. साथी भगत सिंघ शहीद दी शहीदी दे अक्खीं वेखे हालात अते मेरी आप बीती, साहिब सिंघ सलाण

ख़ालसे के बोलबाले का दौर

*-स. किरपाल सिंघ**

मिसकीन लिखता है कि वह भी अपने कुछ घुड़सवार साथियों सहित उसके पीछे चल पड़ा। अभी वह दो कोस दूर ही गया था कि एक अजीब मंजर देख कर दंग रह गया कि कासिम ख़ान और उसकी फौज वापस भागी आ रही थी। उन्हें मात्र तीन घुड़सवार सिक्ख लड़ाकुओं ने आगे लगा रखा था। एक कोस तक मुग़ल फौजियों की लाशें बिखरी पड़ी थीं। इस हालात में मिसकीन भी अपनी जान बचा कर वापस भाग आया था।

अठारहवीं सदी में जब पंजाब में सिक्खों ने विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों तथा दिल्ली की मुग़लिया हुकूमत के विरुद्ध संघर्ष चला रखा था, तब पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो चुकी थी। मीर मन्नू एवं ज़करिया ख़ान की मृत्यु के पश्चात् पंजाब कभी मुगलों तथा कभी अफगानिस्तान के आक्रमणकारी अहमद शाह अब्दाली की शक्ति के प्रभाव में आ जाता था और उनका सिक्खों के विरुद्ध जब्र व जुल्म लगातार जारी रहता था। सिक्ख लड़ाकू जत्थे, बुड्ढा दल और तरुना दल के नेतृत्व में जत्थेबंद होकर हुकूमत के विरुद्ध हथियारबंद छापामार लड़ाई लड़ रहे थे तथा उन्होंने वक्त की मुस्लिम हुकूमत की नींद उड़ा रखी थी। ऐसे हालात में हुकूमत ने हिंदुओं और सिक्खों के दरमियान धार्मिक व सामाजिक लकीर भी खींच रखी थी। क्षेत्र के आबाद गाँवों और शहरों में सिक्ख नाम का कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता था। आम ज़िंदगी जीने का अधिकार केवल हिंदुओं और मुसलमानों को ही हासिल था। हुकूमत को अगर किसी सिक्ख का संबंध हिंदुओं या मुसलमानों के साथ होने का पता चल जाता तो हिंदुओं के लिए मुसलमान बनना या मौत की सज़ा मिलना तय था और मुसलमानों के कुछ लिहाज़ करते हुए उन्हें कोड़ों की सख़्त सज़ा दी जाती थी। हुकूमत द्वारा प्रत्येक गाँव तथा शहर में अपने मुखबिर छोड़े हुए थे जो उसे लुके-छिपे सिक्खों के बारे में सूचनाएं देने का काम

*पूर्व रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर— १४३००६, फोन : ९८५५०-३५३५५

करते थे। ऐसी दशा में सिक्खों के हथियारबंद जत्थे अक्सर दिन ढलने पर सक्रिय हो जाते और प्रात: काल होने से पहले ही अपने ठिकाने की तरफ चले जाते थे। इस तरह के महौल में सिक्खों ने अपना संघर्ष कभी भी सांप्रदायिक नहीं होने दिया। वे हमेशा मुग़लशाही और अफगान लुटेरों को अपना निशाना बनाते थे। सिक्खों ने हर हाल में अपना हथियारबंद संघर्ष जारी रखा था।

तब पंजाब के राजनीतिक मंजर पर एक ऐसा अवसर भी आया जब इसकी बागडोर मुग़लानी बेगम नामक एक तुर्क स्त्री के हाथ में आ गई। वह पंजाब के सूबेदार मीर मन्नू की पत्नी थी। मीर मन्नू की मृत्यु नवंबर, १७५३ ई. में रहस्यमयी हालात में हुई थी। इसकी जानकारी मीर मन्नू का एक घरेलू तुर्क नौकर मिसकीन अपनी पुस्तक 'तज़किरा-ए-मिसकीन' में देता है। उसके अनुसार जब फ़ौज का कमांडर ख़्वाजा मिर्ज़ा कुछ सिक्खों के कटे हुए सिर मीर मन्नू के आगे पेश करता है तो अचानक उसी शाम उसकी तबियत ख़राब हो जाती है और वह आधी रात के पश्चात् तड़प-तड़प कर मर जाता है। उसकी मृत्यु के बाद मुग़लानी बेगम के दो वर्षीय लड़के मुहम्मद अमीन ख़ान को अहमद शाह अब्दाली पंजाब का हाकिम घोषित कर देता है। इस प्रकार मुग़लानी बेगम के हाथ पंजाब की सत्ता आ गई थी।

उसने गद्दी पर बैठते ही सिक्खों के खिलाफ फ़ौजी मुहिमें और तेज़ कर दीं। उन दिनों माझा क्षेत्र के सिक्ख छापामार दस्तों ने लाहौर के आस-पास के इलाकों में अपने पैर जमाने शुरू किये थे।

बेगम ने कासिम ख़ान नामक एक तुर्क को अपनी फ़ौज का जरनैल स्थापित कर दिया, जो पहले लाहौर के किले का जमांदार था। उसके पास पट्टी के इलाके में से मामला उगाहने के अधिकार भी थे। हुकूमत ने उसे सिक्खों के साथ लड़ने के लिए हज़ारों घुड़सवार फ़ौजी, पैदल फ़ौजी दिए हुए थे।

अब हम मुग़लानी बेगम के घरेलू नौकर मिसकीन की पुस्तक, 'तज़किरा-ए-तहमस' के हवाले से एक फ़ौजी मुकाबले के संबंध में बात करते हैं, जो हथियारबंद सिक्ख लड़ाकुओं और कासिम ख़ान की फ़ौज के दरमियान हुआ। भारी लाम-लश्कर से लैस कासिम ख़ान ने लाहौर से दो कोस दूर स्थित कोट लखपत राय के बाग़ में छावनी बना ली। सुबह के समय वह फौजियों की नफ़री तथा हथियार देखता और शाम ढलते ही शराब, मुजरा, नाच-गाने और खाने-पीने का दौर शुरू कर देता। वह तकरीबन हर फ़ौजी को दो-दो मोहरें देता, ताकि वे भी अपनी इच्छा अनुसार ऐश कर सकें। उधर सिक्ख लड़ाकुओं को ऐसे अवसरों की हमेशा तलाश रहती थी। एक रात उन्होंने मुगलों की छावनी को रात के अंधेरे में

घेरा डाल लिया। जब शराब में मस्त हुए कासिम ख़ान को सिक्खों के बारे में पता चला तो वह उन पर हमला करने की बजाय अपनी फ़ौज को ढाल बना कर छिप गया, जबकि उसके कई सैनिकों ने उसे सिक्खों के साथ मुकाबला करने की सलाह दी थी। मिसकीन लिखता है कि सिक्ख मारधाड़ करते हुए उनकी छावनी के निकट आकर ललकारे एवं जयकारे मारते हुए वापस लौट जाते थे। उन्होंने वह भयानक रात बड़ी बेचैनी के साथ बिताई थी। अगले दिन उनकी फ़ौज ने पट्टी की तरफ कूच किया और रास्ते में मुगलों के एक गाँव दमोदरण (जो लाहौर से लगभग बारह कोस दूर था) की सीमा में जाकर डेरे लगा लिए। वहाँ के निवासियों (हिंदुओं और मुसलमानों) ने डर के मारे कासिम ख़ान तथा उसकी फ़ौज का भारी स्वागत किया, लेकिन फ़ौज द्वारा सभी गाँववासियों को रस्सी से बांध कर खेतों में लिटा दिया गया। फौजियों ने गाँव का प्रत्येक घर-घाट लूट कर जला दिया या गिरा दिया। गाँव की स्त्रियों और बच्चों को लगभग एक महीना बंधक बना कर रखा गया और उनसे कई तरह के गलत काम करवाए गए। कासिम ख़ान को शक था कि उस गाँव के निवासी सिक्ख लड़ाकुओं की मदद करते हैं। सिक्ख लड़ाकू भी चैन से नहीं बैठे। वे रोज़ाना सुबह-सुबह या आधी रात के बाद मुगलों के कैंप पर अचानक हमला करते और नुकसान कर भाग जाते थे।

एक दिन कासिम ख़ान को किसी मुखबिर ने वहाँ से कुछ कोस दूर स्थित किसी गाँव में सिक्ख लड़ाकुओं के मौजूद होने की ख़बर दी, तो उसने फ़ौरन अपने भाई अलीम बेग ख़ान को एक हज़ार तेज़तर्रार घुड़सवार तथा पैदल फ़ौजी देकर उन पर हमला करने के लिए रवाना किया। अभी मुग़ल फौज उक्त ठिकाने की राह में ही जा रही थी कि सामने से अचानक सिक्ख घुड़सवार लड़ाकुओं ने हमला कर दिया। हाथोहाथ लड़ाई में मार खाकर अलीम बेग ख़ान मैदान छोड़ कर जिधर रास्ता मिला, उधर भाग गया। इस तेज़तरात झड़प में सिक्ख लड़ाकुओं के हाथों ३०० पैदल तुर्क फ़ौजी मारे गए थे। जब इस करारी हार की ख़बर कासिम ख़ान को मिली तो वह सिक्खों से बदला लेने के लिए अपनी फौज के साथ उधर रवाना हो गया। मिसकीन लिखता है कि वह भी अपने कुछ घुड़सवार साथियों के साथ उसके पीछे चल पड़ा। अभी वह दो कोस दूर ही गया था कि एक अजीब मंजर देख कर दंग रह गया कि कासिम ख़ान तथा उसकी फौज वापस भागी आ रही थी। उन्हें मात्र तीन घुड़सवार सिक्ख लड़ाकुओं ने आगे लगा रखा था। एक कोस तक मुग़ल फौजियों की लाशें बिखरी पड़ी थीं। इस हालात में मिसकीन भी अपनी जान बचा कर वापस भाग आया था।

कासिम ख़ान बदनामी के डर से लाहौर वापस जाने की बजाय दरिया रावी के किनारे पर

अपनी बची-खुची फ़ौज के साथ रुक गया। अब उसने कुछ मध्यस्थ डाल कर सिक्खों को अपने साथ मिलाने की युक्ति बनाई। उसका मकसद सिक्खों की मदद से लाहौर की सूबेदारी पर कब्ज़ा करना था। उसने इलाके के कुछ रसूखदार चौधरियों के माध्यम से सिक्ख जत्थों के साथ बातचीत करनी शुरू कर दी। कुछ सिक्ख जत्थे उसकी बात मान गए और उससे हज़ारों मोहरें, बंदूकें, तीर-कमान एवं अन्य जंगी साज-ओ-सामान लेकर, एक दिन अचानक हरण हो गए। यह हथियारबंद सिक्ख जत्थों की एक चाल थी, जिसका वह शिकार हो गया। सिक्ख हथियारबंद जत्थों की बढ़ती गतिविधियों तथा ताकत को देखते हुए दिल्ली की मुग़लिया हुकूमत ने मोमिन ख़ान नामक एक मुग़ल फ़ौजी को लाहौर का सूबेदार स्थापित कर दिया और एक उजबेक जरनैल ख़्वाजा मिर्ज़ा को उसका फ़ौजदार बना दिया। उन्होंने एक दिन मुग़लानी बेगम को घेर लिया। उसके पाँच-छः हज़ार पूरबी (भईए) फ़ौजी पहले तो कुछ समय लड़े, परन्तु जल्द ही लड़ाई में से जान बचा कर भाग गए। यह घटना सन् १७५४ के आस-पास की है। इसी दौर में अफगानिस्तान के अहमद शाह अब्दाली ने लाहौर को अपने कब्ज़े में लेकर अपने एक जरनैल ख़्वाजा अब्दुल्ला को लाहौर का सूबेदार नियुक्त कर दिया। ख़्वाजा मिर्ज़ा अब्दुल्ला ने सिक्ख हथियारबंद जत्थों को कुछ समय लाहौर पर आक्रमण करने से रोके रखा, मगर लाहौर शहर की चहारदीवारी के सभी दरवाज़े बंद कर निवासियों (हिंदुओं, मुसलमानों) से सोना, चाँदी, नकदी, तांबे और पीतल के बर्तन, कीमती कपड़े व अनाज तक जबरन छीन लिया। यह घटना सन् १७५५ की है। उस समय लाहौर शहर में यह कहावत मशहूर हो गयी थी— ''हुकूमत नवाब अब्दुल्ला। न चक्की रही, न चुल्ला (चूल्हा)।'' लगभग दो वर्ष के राजनीतिक शोरगुल के दौरान जनवरी, १७५७ ई. में अहमद शाह अब्दाली ने अफगानिस्तान से भारी लाम-लश्कर के साथ हिंदुस्तान की तरफ कूच किया। उसने २८ फरवरी, १७५७ ई. को दिल्ली पर हमला कर प्रत्येक अमीर हिंदू-मुसलमान को लूटा और कत्ल-ओ-गारत की। उसे काबुल से दिल्ली आते हुए किसी ने न रोका, लेकिन जब वह लूटमार का सामान लेकर वापस लौट रहा था, तब सिक्ख हथियारबंद जत्थों ने गुरिल्ला हमले कर उससे लूट का माल छीना और सैकड़ों हिंदू बहू-बेटियों को भी छुड़वाया।

सिक्खों के इस बहादुरी और देश-भक्ति से भरे कारनामों को किसी एक भी इतिहासकार ने सही ढंग से कलमबंद नहीं किया। एक साजिश के अंतर्गत अंग्रेज़ों और उनके पिट्ठू इतिहासकारों ने ख़ालसे के बोलबाल वाले इस दौर को अनदेखा किया है।

सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ

*-डॉ. परमजीत कौर**

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए वह धन, सम्मान आदि प्राप्त करना चाहता है। जीवन-निर्वाह के लिए यह जरूरी भी है, मगर दूसरे को पछाड़ आगे निकलने की प्रवृत्ति ने मनुष्य को लोभी बना दिया है। दाता प्रभु को भुलाकर क्षणिक सुख देने वाली वस्तुओं के चक्कर में फंस कर जीवन व्यतीत करने वाले को कभी मानसिक शान्ति प्राप्त नहीं होती।

ऐसे मनुष्य चाहे जितना मर्जी धन एकत्र कर लें, सम्मान-प्रसिद्धि आदि प्राप्त कर लें, राजनीतिक जीवन की मंजिलें, जो देखने में दुर्लभ तथा सुंदर लगती हैं, प्राप्त कर लें, मगर वे कभी तृप्त नहीं होते। उनकी अधिकाधिक प्राप्ति की लालसा समाप्त नहीं होती। अंदर की तृष्णा-भूख बनी ही रहती है :

— बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई॥
ता की त्रिसना कबहूं न जाई॥ (पन्ना १९९)
— त्रिसना बिरले ही की बुझी हे॥१॥रहाउ॥
कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे॥
परै परै ही कउ लुइंनी है॥ (पन्ना २१३)

तृष्णा की कोई सीमा नहीं होती। जैसे आग में घी डालने से आग तेज होती जाती है, वैसे ही मन की कामनाओं की पूर्ति हो जाने पर कामनाएं बढ़ती जाती हैं :

बिखिआ महि किन ही त्रिपति न पाई॥
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै
बिनु हरि कहा अघाई॥रहाउ॥
दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन
ता की मिटै न भूखा॥
उदमु करै सुआन की निआई
चारे कुंटा घोखा॥ (पन्ना ६७२)

श्री गुरु रामदास जी समझा रहे हैं कि अधिकाधिक रसों तथा आस्वादन की जितनी भी तृष्णा है, जैसे-जैसे रसास्वादन किया जाता है, उतनी ही अधिक तृष्णा-भूख बढ़ती जाती है :

जितनी भूख अन रस साद है
तितनी भूख फिरि लागै॥ (पन्ना १६७)

वास्तव में ऐसे जीव यह नहीं समझते कि प्रभु के नाम के बिना सारा सौदा ही घाटे वाला हैं :

बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा॥ (पन्ना ३७६)

श्री गुरु अरजन देव जी के मत में सारी दुनिया नष्ट हो जाने वाले पदार्थों के लोभ में फंसी हुई है। सारे जीव वही कुछ एकत्र करने के लिए भागदौड़ करते रहते हैं, जिसका आत्मिक जीवन में कुछ लाभ नहीं होता :

मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ॥
लोभि विआपी झूठी दुनीआ॥
मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार
सगल ले छलीआ॥ (पन्ना १००४)
— थाके बहु बिधि घालते
त्रिपति न त्रिसना लाथ॥
संचि संचि साकत मूए नानक माइआ न साथ॥
(पन्ना २५७)

ऐसी उपलब्धियों से भूख समाप्त नहीं होती, सदा बनी रहती है :

नामु संगी सो मनि न बसाइओ॥

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥२ ॥
सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥
अंम्रित नामु तोसा नही पाइओ ॥ (पन्ना ७१५)

आज मनुष्य इसलिए दुखी नहीं रहता, भागदौड़ नहीं करता कि उसके पास धन, सम्मान आदि नहीं है या थोड़ा है, वह तो मात्र इसलिए परेशान रहता है कि दूसरों के पास उससे अधिक है। इस ईर्ष्या के कारण वह जगह-जगह भटकता फिरता है। उसके मन की दशा कुत्ते जैसी हो रही है। वह अपनी असीम भूख के अधीन हुआ भक्ष्य-अभक्ष्य, योग्य-अयोग्य का अंतर भूल जाता है। प्राप्ति की अन्धी दौड़ उसको कुछ सोचने ही नहीं देती। पदार्थ-प्राप्ति का नशा विवेक-शक्ति पर हावी हो जाता है :

— जिउ कूकरु हरकाइआ धावै
दह दिस जाइ ॥
लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥
काम क्रोध मदि बिआपिआ
फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ (पन्ना ५०)
— अंतरि तिसा भूख अति बहुती
भउकत फिरै दर बारु ॥ (पन्ना ११३२)

इसी भागदौड़ में वह आत्मिक जीवन का रास्ता भूल जाता है। जैसे-जैसे तृष्णा-भूख बढ़ती जाती है, दुख, तकलीफ, शारीरिक तथा मानसिक रोग भी बढ़ते जाते हैं। बाबा शेख फरीद जी ने इसे 'विसु गंदला' कहा है :

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥
(पन्ना १३७९)

मानसिक शान्ति के लिए मन की भूख का शान्त होना जरूरी है। जब तक मन तृप्त नहीं होता, मन की भटकना समाप्त नहीं हो सकती। गुरु-शबद के अनुसार जीवन बनाने से ही मन संतुष्ट हो सकता है :

अगिआनु त्रिसना इसु तनहि जलाए ॥
तिस दी बूझै जि गुर सबदु कमाए ॥
(पन्ना १०६७)

गुरमति के अनुसार जीवन बनाने से मन का परमेश्वर के साथ सम्बंध बनना आरंभ हो जाता है, मन की दुविधा समाप्त हो जाती है, धीरे-धीरे मन तृप्त होने लगता है :

— तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै
जो हरि नामु धिआवै ॥ (पन्ना ४५१)
— हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपतासे
सभ लाथी भूख भुखानी ॥ (पन्ना ६६७)
— त्रिसना भुख विकराल नाइ तैरै ध्रापीऐ ॥
(पन्ना ९६३)

जैसे-जैसे नाम-सिमरन में मन लगता है, आत्मिक स्थिरता बन जाती है। अंदर सच्चे नाम की भूख जगती है। जीभ प्रभु के प्रेम-रस के स्वाद का आनंद लेने लगती है। मधुर हरि-रस से मन संतुष्ट हो जाता है। तृष्णा की आग प्रबल नहीं होती। सदा नाम की भूख बनी रहती है। कीमती पदार्थों का क्षणिक आनंद नाम-रस के आनंद के मुकाबले तुच्छ प्रतीत होता है :

— हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥
नामि सुनिऐ मनु त्रिपतै मेरे भाई ॥
(पन्ना ३६७)
— हरि रसु जिन्ही चाखिआ पिआरे
त्रिपति रहे आघाइ ॥ (पन्ना ४३१)

हरि-नाम के बिना माया की भूख नहीं मिटती :

— सतिगुरि नामु बुझाइआ
विणु नावै भुख न जाई ॥
नामे त्रिसना अगनि बुझै
नामु मिलै तिसै रजाई ॥ (पन्ना ४२३)
— त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी

प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ (पन्ना ६८२)

जरूरत से ज्यादा कीमती पदार्थ, धन, सम्मान आदि की प्राप्ति की लालसा को त्यागकर नाम-धन एकत्र करने के बारे में सोचना चाहिए। परमेश्वर के नाम के बिना अन्य सरमाया झूठ है :

हरि बिनु होर रासि कूड़ी है
चलदिआ नालि न जाई ॥ (पन्ना ४९०)

जिनके पास नाम-धन होता है, उनको जीवन में कोई कमी, कोई घाटा नहीं होता :

— इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥
संत जना का निरमल मंत ॥ (पन्ना २८८)
— तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥
(पन्ना ७०९)

श्री गुरु अमरदास जी दृढ़ करवा रहे हैं कि मनुष्य के मन के लिए प्रभु का नाम-धन ही जीवन-यात्रा का खर्च है। जो जीव गुरु द्वारा बताए गए मार्ग पर चलता है उसके साथ यह सदा रहता है :

मन का तोसा हरि नामु है
हिरदै रखहु सम्हालि ॥
एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥
(पन्ना ७५६)

इस धन को प्राप्त कर मनुष्य सुखी हो जाता है। मन सांसारिक धन की लालसा छोड़ कर तृप्त रहता है। जिसके हृदय में प्रभु का नाम-धन एकत्र हो जाता है उसको किसी तरह की चिंता तथा भटकना नहीं रहती :

ए मन इहु धनु नामु है
जितु सदा सदा सुखु होइ ॥
तोटा मूलि न आवई लाहा सद ही होइ ॥
खाधै खरचिऐ तोटि न आवई
सदा सदा ओहु देइ ॥
सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ ॥
(पन्ना ५५५)

नाम के बिना सर्वत्र नुकसान ही नुकसान है :

विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ (पन्ना ९३१)

जहां नाम-धन एकत्र किया जाए वहां अनन्त प्रभु का निवास हो जाता है। श्री गुरु अरजन देव जी आदेश दे रहे हैं कि हे गुरसिक्खो ! आप भी आत्मिक जीवन की उन्नति के लिए इस धन को एकत्र करो तथा आनन्दित रहो :

— बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु
खाइ जीवहु सिख परवार ॥ (पन्ना ६१८)
— रे मन ता कउ धिआईऐ
सभ बिधि जा कै हाथि ॥
राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥
(पन्ना ७०४)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि दुनिया का कोई भी धन-पदार्थ, सम्मान, हृदय में बस रहे नाम की बराबरी नहीं कर सकता, मनुष्य को मानसिक शान्ति तथा सुख नहीं दे सकता। वह धन चाहे बादशाहत, सोने-चांदी, रंग-तमाशे या जमीन-जायदाद किसी भी रूप में हो, अहं को ही बढ़ाता है तथा तनाव का कारण बनता है। श्री गुरु अरजन देव जी का फरमान है :

ऐसी पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ॥
राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥
(पन्ना ८१०)

जिस पर प्रभु कृपा करता है वही स्वयं को गुरु को सौंपता है, परमात्मा के नाम-रस से तृप्त हो जाता है। उसको माया की तृष्णा नहीं सताती :

जिसु हरि आपि क्रिपा करे
सो वेचे सिरु गुर आगै ॥
जन नानक हरि रसि त्रिपतिआ
फिरि भूख न लागै ॥ (पन्ना १६७)

गुरबाणी संगीत और वार-गायन

*-डॉ. जतिंदर कौर**

लोक धुनों पर आधारित कीर्तन-शैली को 'वार' कहते हैं। यह एक प्रसिद्ध और लोकप्रिय गायन-शैली है। पंजाबी साहित्य में 'वार' उस काव्य को कहते हैं, जिसमें किसी योद्धा द्वारा जंग के मैदान में दिखाई गई शूरवीरता का वर्णन हो। आम तौर पर जंग के समय सैनिकों को उत्साहित करने के लिए वीरता से भरे जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें 'वार' कहते हैं। वार-काव्य में वीर-रस प्रधान होता है। वार-गायन रूप का सम्बन्ध युद्ध में शूरवीर बहादुरों की लड़ाई एवं शौर्य को चित्रित करता है। इसका उद्देश्य युद्ध-वार्ता को पउड़ी में गाकर पेश करना है।

'वार' शब्द का अर्थ है— सामना करना, पीछे धकेलना, परे हटाना, रोकना। 'शब्दार्थ' के अनुसार 'वार' उस जोशीले गीत को कहते हैं जिसमें किसी योद्धा-या शूरवीर की उपमा का वर्णन हो।[१] देसी भाषा में रचित गीत रूप में यश-गायन का नाम ही वार-गायन है।[२] 'वार' शब्द को घटना के बार-बार गाने, बार (दरवाज़े) जैसे स्थान पर गाने, उपमा करने, सहायता के लिए पुकारने, यश-गायन, वार जाने या वार करने के अर्थ भी दिए जाते हैं।[३]

'वारों' का इतिहास बहुत प्राचीन है। गुरु साहिबान के काल में भी 'वार' लोक-काव्य के रूप में प्रचलित थी। 'वार' संगीत-विधा की प्राचीनता के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है, परन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि यह गायन-विधा श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले भी प्रचलित थी।[४] गुरबाणी-कीर्तन के साथ-साथ इस विधा को भी धार्मिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अनेक स्थानों पर 'वार' का प्रयोग किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल 'वारें' परमात्मा की स्तुति करने के लिए गाई जाती हैं। इनमें दुनियावी भिड़ंत का ज़िक्र नहीं मिलता, बल्कि मानव के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि दुश्मनों के नाश करने का ज़िक्र आता है।

'वारों' में सामाजिक, सदाचारक जीवन-मूल्यों द्वारा आध्यात्मिक अनुभव का बोध करवाया गया है। विद्वानों का मत है कि 'वारें' इतिहास-प्रसिद्ध योद्धाओं के युद्ध-कौशल से सम्बन्धित थीं, इसलिए मूल रूप से ये वीर- रस की रचनायें थीं। श्री गुरु नानक देव जी ने वार रूप में भक्ति-रस की बाणी को

*एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग (गायन), खालसा कालेज फॉर वुमेन, श्री अमृतसर— १४३००१, फोन : ९८७६०-६४०६०

प्रस्तुत किया है।

'वारों' का गायन अतीत काल में ढाडिओं द्वारा ही किया जाता था। ढ़ाडिओं का मुख्य पेशा गायन ही होता था और वे रजवाड़ों एवं बड़े ज़िमींदारों के घर में आश्रित-प्रजा के रूप में जीवन व्यतीत करते थे। वे ज़्यादातर लोक गीतों और वारों के गायन में निपुण होते थे और प्रतिभाशाली ढाडी शास्त्रीय संगीत का भी अभ्यास करते थे। ये लोग (ढड्ड) और सारंगी बजा कर वारों का गायन करते थे। इनमें भी धर्म के आधार पर हिंदू और मुसलमान ढाडिओं के वर्ग होते थे।[५]

ढाडी या भट्ट (गायक) 'वारों' को कंठस्थ कर लेते थे और 'वारें' उनके वंश में परंपरागत रूप से चलती रहती थीं, इसलिए इन्हें लिपिबद्ध करने का प्रश्न ही नहीं उठता था। जिन ढाडिओं को 'वारें' याद होती थीं वे वंश और जातिगत ईर्ष्या के कारण वारों की शिक्षा अपने लोगों तक ही सीमित रखते थे और यदि कोई लिखना चाहता था तो उसके बदले में काफ़ी पैसों की माँग की जाती थी।[६]

श्री गुरु नानक देव जी से पूर्व रचित लोक-वारों के रचना-काल के बारे में कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती। लोक-वारों की धुनों पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज वारों के गायन के संकेत मिलते हैं। इन लोक चारों का विवरण इस प्रकार है :—

१. टुंडे अस राजै की वार
२. ललां बहलीमा की वार
३. सिकंदर बिराहिम की वार
४. राणे कैलास तथा मालदे की वार
५. मूसे की वार
६. राइ कमाल दी मोजदी की वार
७. जोधै वीरै पूरबाणी की वार
८. मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की वार
९. राइ महमे हसने की वार

ये वारें संपूर्ण रूप में हमें नहीं मिलती, परन्तु इनका आंशिक रूप धुनों के रूप में देखा जा सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की वारों को इन धुनों पर गायन करने का संकेत किया गया है। जैसे 'आसा की वार' को 'टुंडे असराजे की वार की धुन' पर गाने का संकेत मिलता है। 'आसा की वार' का कीर्तन इसी परंपरागत धुन के आधार पर किया जाता है, लेकिन इसका प्रमाण पेश करना असंभव प्रतीत होता है। हो सकता है कि इस प्राचीन धुन में परिवर्तन भी आया हो। हो सकता है कि प्राचीन वारों की बहुत-सी धुनें समय के चक्र के साथ ख़त्म हो गई हों।

एक बात हम विशेष तौर पर देखते हैं कि वारों को रागबद्ध रूप में गाए जाने पर विशेष ज़ोर दिया जाता था और आज भी कुशल गायक इन्हें अक्सर रागबद्ध रूप में ही गाते हैं। धुनों पर आधारित वार-गायन ने भी धार्मिक संगीत शब्द-गायन की भांति शास्त्रीय संगीत के ढांचे में ढल कर जनता में लोकप्रियता

हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। इसमें दो मत नहीं हो सकते ॥७

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में २२ वारें संकलित हैं, जिन्हें सत्रह रागों में गाया जाता है :—

—श्री गुरु नानक देव जी की तीन वारें

—श्री गुरु अमरदास जी की चार वारें

—श्री गुरु रामदास जी की आठ वारें

—श्री गुरु अरजन देव जी की छः वारें

—भाई सता जी और भाई बलवंड जी की एक वार

इन २२ वारों में से २१ वारें गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित हैं और एक वार, जो राग रामकली में है, भाई सता जी, भाई बलवंड जी द्वारा उच्चरित है। ये उस समय के प्रसिद्ध रबाबी थे। इनकी वार को 'टिक्के की वार' के रूप में भी जाना जाता है।

इन वारों को निम्नलिखित १७ रागों में गायन करने का निर्देश है :— सिरीरागु, माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी, बिहागड़ा, वडहंसु, सोरठि, जैतसरी, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, बसंतु, सारंग, मलार, कानड़ा।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वार-गायन में दर्ज उक्त शीर्षक के फरमान सहित ही इन वारों का गायन किया जाता है, जिन वारों के साथ अलग-अलग विशेष राग धुनियां भी अंकित की गई हैं।

१. सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥ (पन्ना ८३)

२. वार माझ की तथा सलोक महला १ मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ (पन्ना १३७)

३. गउड़ी की वार महला ४ (पन्ना ३००)

४. गउड़ी की वार महला ५ राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी (पन्ना ३१८)

५. आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥ (पन्ना ४६२)

६. गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी (पन्ना ५०८)

७. रागु गूजरी वार महला ५ (पन्ना ५१७)

८. बिहागड़े की वार महला ४ (पन्ना ५४८)

९. वडहंस की वार महला ४ ललां बहलीमा की धुनि गावणी (पन्ना ५८५)

१०. रागु सोरठि वार महले ४ की (पन्ना ६४२)

११. जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि (पन्ना ७०५)

१२. वार सूही की सलोका नालि महला ३ ॥ (पन्ना ७८५)

१३. बिलावलु की वार महला ४ (पन्ना ८४९)

१४. रामकली की वार महला ३ ॥ जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी (पन्ना ९४७)

१५. रामकली की वार महला ५ (पन्ना ९५७)

१६. रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी (पन्ना ९६६)
१७. मारू वार महला ३ (पन्ना १०८६)
१८. मारू वार महला ५ डखणे म: ५ (पन्ना १०९४)
१९. बसंत की वार महलु ५ (पन्ना ११९३)
२०. सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि (पन्ना १२३७)
२१. वार मलार की महला १ राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ (पन्ना १२७८)
२२. कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी (पन्ना १३१२)

उपरोक्त वारों को गुरु साहिबान ने जहाँ विभिन्न रागों के अधीन अंकित किया है, वहीं इनके अधीन विभिन्न नौ वारों को गाने की धुनें भी दी हैं। ये धुनें उस समय के प्रचलित लोकसंगीत-प्रवाह का अनूठा व विशेष अंग हैं। इन वारों के साथ धुनों के अलावा राग का जो संकेत दिया गया है, उसका सीधा सम्बन्ध गायन के साथ है।[९].

इन वारों की सांकेतिक धुनियों का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आना इन वारों की प्रसिद्धि और प्राचीनता का ठोस प्रमाण है और यहाँ से यह भी संकेत मिलता है कि पंजाबी वार का जन्म भक्त शेख फ़रीद जी की बाणी के साथ तेरहवीं सदी के आस-पास हो चुका था।[१०].

यह धुनि-संकेत छठे पातशाह ने भी दिया हुआ है, क्योंकि पंचम पातशाह की शहीदी के पश्चात् ही छठे गुरु साहिब ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर दीवान सजा कर वीर-रसी वारें गायन करने की प्रथा चलाई। ये सभी धुनें भी वीर-रसी वारों की तरफ संकेत करती हैं।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने ढाडी परंपरा एवं वार-गायन को स्थायी रूप प्रदान किया और अपने दरबार का विशेष अंग बनाया। इनके दरबारी ढाडी भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला थे। ये दोनों योद्धाओं की वारें गाया करते थे :

नत्था ढडु बजाइआ, अबदुला हाथ रबाबा
अबदुल्ला ढाडी जस सुनाए।[११].

कहा जाता है कि एक बार जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने अपने अनुयायियों में वीर-रस की भावना उत्पन्न करने के लिए एक ढाडी दरबार किया तो इन दोनों भाइयों ने ७२ वारें गाकर सुनाई।[१२]

लोक-वारें पंजाबी समाज तथा सभ्याचार का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की ज्यादातर वारों को इनकी धुन पर गाने की एक ख़ास परंपरा है। धुन (धुनी,धुनि) का अर्थ है— गायन करने की धारणा या गायन करने का ढंग। गुरबाणी में अंकित २२ वारों में से ९ वारें ऐसी हैं जिन पर धुनी शीर्षक अंकित किए जाते हैं। वास्तव में वारों की लोक-धुनें गुरु-काल में बहुत

प्रचलित व प्रसिद्ध थीं। इस बात की पुष्टि भाई कान्ह सिंघ नाभा करते हैं कि ''श्री गुरु अरजन देव जी ने नौ वारें ऐसी चुनीं जिन्हें गायन करने की धारणा पुराने योद्धाओं की वारों के अनुसार रबाबियों को बतायीं। '' श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने ढाडिओं से ये नौ धुनें वीर रस की पालना के लिए गवाईं, जो अब तक टकसाली रागी-रबाबी गाते हैं।[१३]

ये वारें सिक्ख समागमों और कीर्तन दरबारों में गाई जाती हैं। मूल रूप से वार जंग- युद्ध से सम्बन्धित काव्य रूप है, जिसमें बहादुर योद्धाओं की लड़ाई व शूरवीरता को संगीतमयी प्रस्तुति द्वारा पेश किया जाता है। इसके गायकों को ढाडी कहा जाता है, जो वारों को सम्बन्धित क्षेत्रीय धुनों के अनुसार गायन करते हैं, क्योंकि वारें अधिकांशत: क्षेत्रीय भावनाओं को दृष्टिगोचर रख कर ही पेश की जाती हैं, इसलिए अपने वीरों, शूरवीरों की बहादुरी सुन कर राजा-महाराजा तथा जनसाधारण आनंद प्राप्त करते हैं। वार वीर-रस से भरपूर होने के कारण इसका गायन बुलंद आवाज़ में किया जाता है। वार के गायन के लिए सारंगी और ढड्ड का प्रयोग किया जाता है।[१४]

ढाडी विशेषत: लोक-धुनों में वारें गाते हैं। ये लोग अक्सर धार्मिक कविताओं की भी रचना करते हैं और उसी को लोक-धुनों में पिरो कर सुनाते हैं। ये धार्मिक कवितायें वारों की भांति वीर-रस से ओतप्रोत होती हैं और मुख्य उत्सवों, जैसे गुरु साहिबान के शहीदी दिवस, चारों साहिबजादों के शहीदी दिवस और वैसाखी के अवसर पर इसका गायन श्रवण करने वालों में वीर-रस का संचार पैदा करती हैं।[१५]

वार की रचना पउड़ी नामक छंद और सलोकों पर आधारित होती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में २२ वारें दर्ज हैं, जिनमें २० वारें सलोकों सहित हैं। केवल दो वारें ऐसी हैं जो पउड़ियों में ही हैं। एक राग रामकली में भाई राय बलवंड जी और भाई सता जी द्वारा उच्चारण की हुई है तथा दूसरी बसंत राग में श्री गुरु अरजन साहिब द्वारा उच्चारित है।[१६]

लोक-वार गायन का अपना एक ख़ास ढंग है। वार को गाने वाला गवैया इसका विभाजन कलियों एवं विचारों में कर लेता था। वह एक-एक कली गाकर उसके साथ विचार सुनाता था। यह कली पाँच, सात या दस, बारह पंक्तियों तक हो सकती है। विचार और कलियों के सुमेल के माध्यम से बात श्रोताओं की समझ में आ जाती है।

गायन की दृष्टि से 'आसा की वार' के संदर्भ में यदि हम अध्ययन करें तो 'आसा की वार' को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज टुंडे असराजे की वार की धुनी के संकेत के अनुसार और आसा राग में ही गाया जाता है। 'आसा की वार' में केवल सलोक और

पउड़ियां ही नहीं, बल्कि छंत को भी गायन करने की प्रथा है। 'आसा की वार' में से छंत का राग आसा के अंतर्गत टकसाली गायन-ढंग, जो परंपरागत रूप में प्रचलित है, वह एक ताल में या यक्के में निबद्ध है। छंत को गायन करने के बाद सलोक का सहायक रागी आसा राग के अधीन और ताल से स्वतंत्र होकर गायन करता है। सलोक के गायन पर रागी जहाँ श्रोता को गुरबाणी का ज्ञान करवाता है, वहीं सम्बन्धित राग का स्वरूप भी स्पष्ट किए जाता है। यह सलोक फिर बारी-बारी से दोनों रागी पढ़ते हैं। फिर पउड़ी का तीनों रागी मिल कर मध्य लय तथा तार सप्तक में गायन करते हैं। पउड़ी के लिए ख़ास ताल का प्रयोग किया जाता है, जो पउड़ी के लिए विशेष है, जिसके बोल :— ''गे तिट ता गेता'' हैं। इसमें पहले गे ते सम है। पउड़ी की आखिरी पंक्ति को विषय स्वरूप में तोड़ा मार कर खत्म किया जाता है और तीसरी बार एक मात्रा बढ़ा कर समाप्ति की जाती है।[१७]

वार वीर-रस से भरपूर होने के कारण इसका गायन बुलंद आवाज़ में और ज्यादातर तार सप्तक में किया जाता है। वारों के गायन के लिए सारंगी तथा ढड्ड का प्रयोग किया जाता है। ढड्ड पर चार मात्रा के बोल— ''गे, तिट, ता, गेता'' बजाए जाते हैं।

गुरु-काल में वार गायन मुसलमान ही किया करते थे। भारत-विभाजन के बाद ज़्यादातर मुसलमान पाकिस्तानी क्षेत्र में रह गए या अधिक संख्या में भारत से पाकिस्तान जाकर बस गए। फलस्वरूप अब भारत में वार-गायन करने वाले मुसलमान ढाडी देखने में नहीं आते। मात्र सिक्ख ढाडी ही इनका गायन करते हैं।

हवाले और टिप्पणियाँ :

१. शब्दार्थ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पृष्ठ ८३
२. डॉ. चरन सिंघ, बाणी बिउरा, पृष्ठ ८९
३. डॉ. सुरिंदर कौर (कोहली), गुरु नानक : दर्शन और काव्य-कला, पृष्ठ ३११
४. उक्त, पृष्ठ ३११
५. उक्त, पृष्ठ ४०
६. स. पिआरा सिंघ (भोगल), साहित्यक निबंध, पृष्ठ ३३७
७. डॉ. गीता पैंतल, पंजाब दी संगीत परंपरा, पृष्ठ ३९
८. डॉ. गुरनाम सिंघ, गुरमति संगीत : प्रबंध ते प्रसार, पृष्ठ १५२
९. उक्त, पृष्ठ १५२
१०. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), गुरू नानक विचारधारा, पृष्ठ १८०
११. एस. एस. गोकल, सिक्ख धर्म अते संगीत, पृष्ठ ६६
१२. प्रो. पिआरा सिंघ, साहित्यक निबंध, पृष्ठ ३३७
१३. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरू शब्द रत्नाकर महान कोश, पृष्ठ ५०१
१४. डॉ. गुरनाम सिंघ, गुरमति संगीत : प्रबंध ते प्रसार, पृष्ठ १५२
१५. डॉ. अजीत सिंघ पैंतल, सिक्ख गुरुद्वारों की हरि-कीर्तन में शास्त्रीय संगीत की परंपरा, पृष्ठ ५२
१६. सामाजिक विज्ञान पत्र, गुरमति संगीत दीआं लोक गायन शैलियां, पृष्ठ १३
१७. डॉ. गुरनाम सिंघ, गुरमति संगीत : प्रबंध ते प्रसार, पृष्ठ १५२

ख़बरनामा

गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे की शताब्दी के मुख्य समारोह पर पंथ-विरोधी शक्तियों के ख़िलाफ़ लामबंद होने का आह्वान

श्री अमृतसर : ८ अगस्त : १०० वर्ष पूर्व सन् १९२२ में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के अंतर्गत लगाए गए गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे की पहली शताब्दी से सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गुरुद्वारा गुरु का बाग़, गांव घुक्केवाली, जिला श्री अमृतसर में आयोजित विशाल समारोह में बड़ी संख्या में पंथक शख़्सियतों एवं संगत ने शमूलियत की। इस शताब्दी समारोह के दौरान पंथ की प्रमुख शख़्सियतों ने अपने संबोधन में सिक्ख इतिहास से सीख लेने और एकजुटता के साथ पंथ की चढ़दी कला के लिए कार्य करने की ज़रूरत पर बल दिया।

संगत की विशाल सभा को संबोधित करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि ख़ालसा पंथ ने हमेशा ही हक-सच के लिए लड़ाई लड़ी है और गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का मोर्चा भी इसी प्रसंग में ही फ़तह किया गया था। इस मोर्चे में अंग्रेज़ सरकार ने ज़ुल्म की हद पार कर दी थी। सिक्खों ने दृढ़ता के साथ धैर्य बनाए रखा और विजय प्राप्त करने तक संघर्ष जारी रखा। उन्होंने कहा कि कौम के इस गौरवमयी इतिहास को नौजवानों तक लेकर जाने की ज़रूरत है, ताकि भविष्य में चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अगली पीढ़ी तैयार हो सके। उन्होंने धर्म-परिवर्तन के बारे में बात करते हुए कहा कि इस घटनाक्रम को रोकने के लिए सिक्खों को अपने इतिहास से दिशा प्राप्त करनी चाहिए। इस सम्बन्ध में दसम पातशाह जी के साहिबज़ादों का इतिहास प्रेरणा-स्रोत है, जो अनेक प्रकार के लालच और मुगलों के ज़ुल्म की इंतहा के बावजूद भी अपने धर्म पर अडिग रहे। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने शिरोमणि अकाली दल के नेताओं को सिक्खी प्रचार के लिए आगे आने के लिए भी कहा। जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को भी सिक्खी-प्रचार के लिए घर-घर तक पहुँच करने और खासकर संवाद-विधि अपनाने के लिए प्रेरित किया।

इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सिक्ख इतिहास को संगत तक पहुँचाने के लिए सक्रिय धर्म प्रचार लहर जारी रखने का एलान करते हुए संगत को भी सिक्खी-प्रचार के लिए सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बहुत-से लोग सिक्ख विरोधी शक्तियों की शह पर सिक्ख पंथ में फूट डालने का यत्न कर रहे हैं, जिनकी चालों को समझने की बड़ी ज़रूरत है। एडवोकेट धामी ने कहा कि आरएसएस की शह पर ये लोग पंजाब में ज़मीन तैयार करना चाहते हैं और इनका उद्देश्य परोक्ष-अपरोक्ष रूप से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के चुनाव के माध्यम से गुरुद्वारों का प्रबंध हथियाना है। खालसा पंथ ऐसी शक्तियों के विरुद्ध हमेशा संघर्षशील रहा है और आज भी है। यह इनकी साज़िशी चालों को कामयाब नहीं होने देगा। उन्होंने कहा कि चुनौतियों के समय में सिक्ख कौम हमेशा प्रफुल्लित हुई है और इसके गवाह सिक्ख इतिहास के साके

और मोर्चे हैं। गुरुद्वारा गुरु का बाग़ का मोर्चा भी ऐसी ही चुनौतियों में से निकला था, जिसमें सिक्ख कौम ने विरोधी शक्तियों को मात दी थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने स्पष्ट किया कि सरहदी इलाके में धर्म-परिवर्तन से सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रचारक लगातार कार्यशील हैं। उन्होंने कहा कि वैसे इस बारे में चर्चा ज़्यादा है और ज़मीनी स्तर पर हालात कुछ और हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने एलान किया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संचालित सिक्ख मिशनरी कॉलेजों के सैकड़ों विद्यार्थी सरहदी इलाकों में प्रचार के लिए भेजे जाएंगे, ताकि धर्म परिवर्तन के बारे में वास्तविकता का पता लगाया जा सके।

शताब्दी समारोह के दौरान शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल ने मोर्चा गुरु का बाग़ में हिस्सा लेने वाले सिक्ख योद्धाओं को सम्मान भेंट करते हुए सिक्ख रिवायतों का पालन करने की वचनबद्धता अभिव्यक्त की। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम द्वारा लगाए गए मोर्चे सिक्ख पंथ की शक्ति का स्रोत हैं। सिक्ख इतिहास में मोर्चों के पन्ने अति अहम हैं, जिनमें से अकाली योद्धाओं का संघर्ष नज़र आता है। उन्होंने कहा कि सिक्ख इतिहास के साके एवं मोर्चे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल द्वारा दृढ़तापूर्वक लड़े गए थे। ये सिक्ख पंथ की वे संस्थाएं हैं, जिन्होंने सिक्खी की चढ़दी कला एवं पंजाब के मसलों के लिए अपने नुकसान की परवाह नहीं की। दुख की बात है कि पंथ-विरोधी लोगों द्वारा आज पंथ की इन संस्थाओं को कमज़ोर करने के यत्न किये जा रहे हैं। स. बादल ने कहा कि शिरोमणि अकाली दल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पर बिना कारण उंगली उठाने वाले लोग ख़ुद पंथ-विरोधियों की लपेट में हैं और इनकी चालों को पंथ कभी कामयाब नहीं होने देगा। उन्होंने कहा कि शिरोमणि अकाली दल हमेशा सिक्ख पंथ के मसलों पर संजीदा रहा है और गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे की प्रथम शताब्दी के अवसर पर प्रण करता है कि यह पंथक भलाई के लिए हमेशा यत्नशील रहेगा।

इस अवसर पर दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ खालसा, तरुना दल के प्रमुख बाबा निहाल सिंघ हरियांवेलां, शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी, दल बाबा बिधीचंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ ने भी संगत को अपने विचारों से अवगत कराया और गुरबाणी व सिक्ख इतिहास को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की अपील की। उन्होंने मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ के योद्धाओं को याद किया और सिक्ख इतिहास के इन पन्नों से हर सिक्ख को परिचित होने तथा अपने बच्चों को परिचित होने की प्रेरणा की। इससे पहले श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए। सिंघ साहिब ज्ञानी गुरमिंदर सिंघ ने संगत के साथ गुरमति विचारें सांझी की। ढाडी और कवीशरी जत्थों ने एतिहासिक वारें गाकर मोर्चे का इतिहास श्रवण करवाया। समागम के समय मोर्चे का हिस्सा रहे और शहीद हुए सिंघों के पारिवारिक सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा पहुंची अन्य पंथक शख़्सियतों को भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने सम्मानित किया।

जब सरकारें कान बंद कर लें तो संघर्ष का रास्ता अपनाना ही पड़ता है : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : १३ अगस्त : देश की विभिन्न जेलों में लंबे अरसे से नज़रबंद व सज़ा पूरी कर चुके सिंघों की रिहाई को लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा देश की स्वतंत्रता की ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर पंजाब भर में ज़िला मुख्यालयों पर रोष-प्रदर्शन करते हुए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर डिप्टी कमिशनरों को माँग-पत्र सौंपे गए। श्री अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर को माँग-पत्र सौंपने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के नेतृत्व में श्री दरबार साहिब के बाहर स्थित प्लाज़ा में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य साहिबान और कर्मचारी एकत्र हुए, जहाँ से डिप्टी कमिश्नर कार्यालय तक रोष-प्रदर्शन किया गया। रोष-प्रदर्शन के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान सहित सदस्य साहिबान तथा कर्मचारियों ने काली दसतार सजाई हुई थी और हाथों में बंदी सिंघों की रिहाई से सम्बन्धित नारे लिखे बैनर व तख्तियां पकड़ी हुई थीं। डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी से एसडीएम श्री हरप्रीत सिंघ ने माँग-पत्र प्राप्त किया और इसे आगे कार्यवाही के लिए सरकार के पास भेजने का भरोसा दिया।

इस अवसर पर बातचीत करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि बीते ३०-३० वर्ष से देश की जेलों में बंद सिंघों के साथ इन्साफ नहीं किया जा रहा और एलान करने के बाद भी सरकारें सिंघों की रिहाई नहीं कर रही। उन्होंने कहा कि यह बेहद निंदनीय है कि देश के लिए सबसे अधिक कुर्बानियां करने वाले सिक्खों के साथ धक्का किया जा रहा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा देश के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्रियों से मुलाकात के लिए समय मांगने के बावजूद भी समय नहीं दिया जा रहा, जिससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि सरकारों की मंशा ठीक नहीं है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि एक तरफ़ देश आज़ादी की ७५वीं वर्षगांठ मना रहा है और दूसरी तरफ़ सिक्खों को ग़ुलामी का एहसास करवाया जा रहा है। देश के संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को एक ही जैसे अधिकार प्राप्त हैं, परन्तु सिक्ख बंदियों को उनके मानवाधिकारों से वंचित रखना संविधान की घोर उल्लंघना है। उन्होंने कहा कि बंदी सिंघ उम्र-कैद से भी दुगनी सज़ा काट चुके हैं, जिस कारण वे रिहाई का हक रखते हैं। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि जब देश की सरकारें कान बंद कर लें तो ऐसे में संघर्ष का रास्ता चुनना ही पड़ता है। उन्होंने कहा कि फ़िलहाल यह एक सांकेतिक रूप से रोष-प्रदर्शन किया गया है और यदि सरकारें न जागीं तो भविष्य में संघर्ष की रूप-रेखा बनायी जायेगी।

गुरुद्वारा श्री कंध साहिब, बटाला

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN September 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

भाई घन्हईआ जी

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh
Date: 7-9-2022